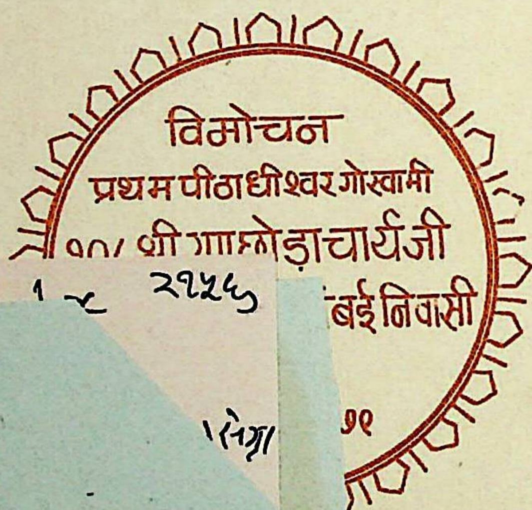
# श्री राधामोहनमाधुरी



संकलनकर्ता: बेनीप्रसाद जाजोदिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri




CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

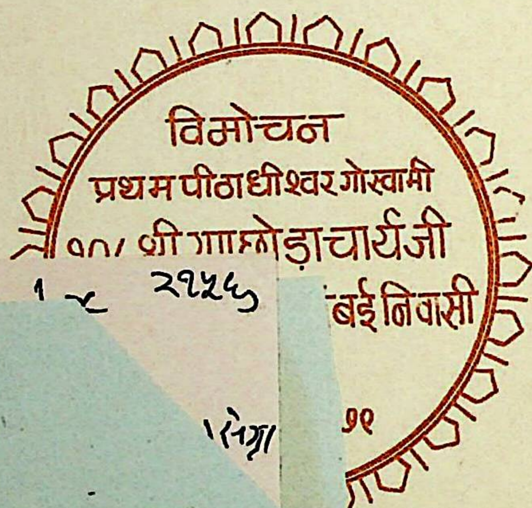
0152,1x
L0

22256

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri




CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# समर्पण

पूज्य श्री दादाजी व पिताजी की अगाध भगवद्‌सेवा से प्रेणित होकर मैनें भी श्रीकृष्ण चरण रज का स्वाद लिया - प्रभो यह तुच्छ भेंट आपकें हि चरणों में समर्पित है।

दासानुदास
बेनीप्रसाद जाजोदिया.

30/६/९१

1970

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक........2156.......
दिनांक.............................

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,1x
L0

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# दो शब्द -

॥ श्री कृष्णाये नमः ॥

॥श्रीवल्लभ विजयते भवः॥

विश्ववंद्य जगद्गुरु पूज्यपाद महाप्रभुजी श्री वल्लभाचार्यजी आज से पांचसौ वर्ष पूर्व मध्य प्रदेश के चंपारण्य (चांपासर) ग्राम में अग्निकुंड के मध्य प्रकट हुए। वेद वेदान्त, गीता, भागवत व ब्रह्मसूत्र पर आधारित पुष्टिमार्ग- यानी परमेश्वर की कृपा ही सर्वोच्च व सर्वोत्तम साधन है और भगवत् शरणांगति ही सरल उपाय है- की स्थापना की। मुसलमानी राज्य की जड़ें उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य का व दक्षिण में बहमनी सलतनतोंका पूरा बोलबाला था- स्वार्थवश जनता राज्य की कृपा की आकांक्षित थी- व हिन्दु मंदिरों पर आये दिन मुसलमानों के हमले होते थे तथा उन को नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाता है। पुष्टिमार्ग द्वारा हवेलियों में भक्ति की अजस्र धारा बहाई- सनातन वैदिक धर्म में श्रीमद्भागवद पुराण अनुसार हर प्राणी- पुरुष या स्त्री, सवर्ण या हरिजन पापी या महात्मा निगुर्ण प्रेम भक्ति द्वारा निज का आत्म कल्याण कर सकता है। इस से हिन्दु समाज में नई जाग्रती व चेतना हुई।

श्रीमद् भागवत पर श्रीधरी टीका और कईटीकाएं उपलब्ध थी। महाप्रभुजीको उनसे संतोष नहीं हुवा। भागवतशास्त्र, प्रत्येक स्कन्ध का अर्थ तथा उस में आये हुए प्रकरणों व अध्यायों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए "तत्व दीप निबंध" में "भागवतार्थ प्रकाश" यानी कारिका की रचना की और प्रकाशित किया। व हर भागवत के श्लोक का अर्थ, हर शब्द काअर्थ तथा वर्णोंके अर्थ का खुलासा सुबोधिनी टीका में किया- यह टीका संस्कृत में है- इस का गुजराती अनुवाद तो पहले हो चुका था किन्तु अब जोधपुर से



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशित हिन्दी सरल अर्थ भी उपलब्ध है।

महाप्रभुजीने 'प्रकाश' नाम की कारिका पर टीका स्कन्ध ४ (चार) की ३२ कारिका तक लिखी। स्कंध पांच की कारिका १३५ ½ कारिका तक गोसाई श्री विट्ठलेशजी ने लिखी। कारिका पर टिप्पणी गोसाईं श्री वल्लभजीने तथा 'लेख' श्री पुरषोत्तमजी, सूरतवालोंने तथा 'प्रकाश' श्री लालू भट्टजीने व 'योजना' श्री निर्भयरामजीने लिखकर कारिकार्थ पूरा किया।

श्रीमद् भागवत गायत्री बीज के वेदरूपी वृक्ष का पक्का फल है जिस में रस ही रस है। गुठली का नाम निशान नहीं

श्रीमद् भागवत सुधा रस

श्री भागवत-अमृत दधि मथ के, श्रीवल्लभ सर्वोत्तिम।
कर आवरण दूर निजजन के, हाथ दिये पुरषोत्तम॥
सेवा साज सिंगार सुमन रस, राग लोभ प्रगटा यो।
वृन्दावन निकुञ्ज की लीला हरि, जीवन स्वाद चखायो॥

श्रीमद् भागवत हरि स्वरूप है। १२ स्कंध १२ अंग है। श्री धरी टीका व कई अन्य टीका होते हुवे भी श्री महाप्रभुने टीका लिखी।

श्री वल्लभ विज्ञान अध्ययन-माला द्वितिय पुष्प में कहा है

नाश्रितो वल्लभाधीशो न च दृष्टा सुबोधिनी।
नाराधि राधिका नाथो वृथा तज्जन्म भूतले॥

श्री हरिरायजी कृत

· राग विहाग ·

अरे मन श्री वल्लभ गुण गाय
वृथा काल काहे को खोवत वेद पुराण पढाय॥१॥
श्री गिरराज धरन पैयेदे को नाहिन और उपाय,।
रसिक शरण अनन्य होय के चित्त इत उत न डुलाय॥२॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गायो न गोपाल, मन लायो न रसाल लीला,
सुनी न सुबोधिनी, न साधु संग पायो है।
सेव्यो न स्वाद करि, धरि आधि धरि हरि;
कबहु न कृष्णनाम रसना रटायो है॥१॥
वल्लभ श्री विट्ठलेश, प्रभु की शरण जाय,
दीन होय मति हीन, सीस न नमायो है।
रसिक कहे बारबार, लाजहु न आवे तोहि,
तें मनुष्य जन्म पायो, कहाँ ले कमायो है॥२॥

## रसकलानिधि महाकवि सूरदास

सूरदासजी का जन्म वि. संवत १५३५ में सिदिग्राम (दिल्ली के पास) में हुवा। सूरस्वामी संवत १५६५ में मथुरा के निकट रुनकता गांव में गउघाट पर रहने लगे। १५६६ में महाप्रभुजी से भेंट हुई व कंठ माधुर्य की ख्याति सुनकर इन को पद गाने के लिये कहा। इन्होंने विनय के पद सुनाये तो श्री वल्लभाचार्यजीने कहा कि सूर होकर काहे को घिघियाते हो। महाप्रभुजी से ब्रह्म संबंध लिया व सूर श्याम के सखा हो गये। उन्हीं के शब्दों में सुनिए...

श्रीवल्लभ गुरु तत्त्व सुनायो, लीला भेद बतायो।
ता दिन ते हरिलीला गाई, एक लक्ष पद बंद॥
ताको सार सूर सारावली गावत अति आनंद
सरस समतसर लीला गावे, चरन जुगल चित लावे।
गरभवास बंदी खाने में, सूर बहुरि नहिं आवे॥

गोवर्धन पर श्रीनाथजी के मंदिर में कीर्तन करने लगे। यह जन्मांध थे खुद कुछ नहीं लिखा। इन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। गुरु कृपा से उन्होंने भगवान के श्रृंगार का नख सिख वर्णन बहुत सुन्दर किया है- भक्ति काव्य में जो वर्णन सूरदासजीने किया वैसा सरस आत्म निवेदन व प्रभुश्याम सुन्दर के समक्ष आत्म प्रकाशन बड़े ही सुंदर ढंग से किया।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि केशवदासने कहा है-

"सूर सर, तुलसी शशी केशव उड़गन दास"

पौन सौ वर्ष तक रचना करते रहे। शरीर शिथिल हो गया किन्तु काव्य चेतना अपितु आराध्य देव की रूप माधुरी का वर्णन और भी दिन दिन निखरता गया।

श्री सीतारामजी चतुर्वेदी की अध्यक्षतामें १५ विद्वानोंने सूर साहित्य का अध्ययन किया व सूर सागर आदि के बिखरे सुमनों को एक गुच्छे में पिरोया जिसमें विनय के ६१८ पद भी शामिल है (४३०८+६१८ = ४९२६)। व अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी ने इसे पांच खण्डों में प्रकाशित किया। इन में एकादश व द्वादश स्कंध पर के पद अलग हैं इसी तरह दूसरे विषयों पर पद कहे हैं सब मिलाकर ५३६४ पदों को सूरदासजी रचित बताया है। चतुर्थ खण्ड के अन्त में सूर-सारावली व सूर ग्रंथावली व साहित्य लहरी सेवाफल के पद हैं। पांचवा खण्ड अभी प्रकाशित नहीं हुवा है। महाकवि सूरदासजीकी प्रामाणिक रचनाएँ है- विनय के पद, राम-गीतावली (नवम स्कंध संग्रहित) दशम स्कंध से संबद्ध पद, साहित्य लहरी सेवाफल। द्वितिय से अष्टम स्कंध, एककादश व द्वादश स्कंध के पदों में साहित्यिक काव्य गुणों का कुछ अभाव है। सूरदासजीने गेय पदों की ही रचना नहीं की उन्होंने अनेक लीलाओं का प्रबंधात्मक वर्णन भी किया जो दूसरी लीलाके नाम से विख्यात हैं- (सूर सारावली)

वे दिन में कृष्ण के सखा और रात में चम्पक लता नाम की सखी के रूप में रहते थे। सूरदासजी की अनेक रचनाएँ गायको, कीर्तनियों, अष्टछापके पद संग्रहों व नित्य कीर्तन संग्रहों में बिखरी पड़ी है। इन्हों ने बृजभाषा के अलावा खड़ी बोली, पंजाबी, गुजराती, फारसी व अरबी में भी रचनाएं की।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहावत है कि सूरदासजीने एक लाख पद लिखे। श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार कलकत्ते वालों के सूरसागर में पदों के अलावा पदबन्दों की संख्या १६००० दी हुई हैं अनुमान है उन्होंने करीब १२००० पदों की रचना की सूरदासजी को महाप्रभुजी सागर कहा करते थे।

सुरदासजीके शब्दों में गुरुनिष्ठा का रस स्वादन कीजिए-

- राग- विहाग -

भरोसो दृढ़ इन चरनन करो।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिन सब जुगमाहिं अँधेरो॥
साधन और नाहीं या कलिं में जासो होय निबेरो।
सूर कहा करे दुविध आँधरो बिना मोल को चेरो॥

दासानुदास,
बेनीप्रसाद जाजोदिया,
अमरावती.





## • श्री बल्लभाचार्यजी की रचनाएँ •

पुष्टि मार्ग सम्प्रदाय अनुसार श्री बल्लभाचार्यजीने चोरासी ग्रन्थों की रचना की। कुछ प्राचीन ग्रंथों की टीकाएँ हैं व कुछ स्वतंत्र ग्रंथ हैं। कई लुप्त हो गये हैं। तत्त्वदीप निबन्ध में शास्त्रार्थप्रकरण में १०४ सर्व निर्णय प्रकरण में ३२९ व भागवतार्थ प्रकरण में १९२२ कारिकाएँ हैं- अणुभाष्य ३।२।३३ तकका ब्रह्मसूत्र पर भाष्य उपलब्ध है। भागवत की सुबोधिनी टीका व तत्त्वदीप-निबन्ध की प्रकाश टीका अधूरी ही अपने जीवन में छोड गये। पूर्व मीमांसा कारिका: ५२ कारिकाएँ व भावार्थपर का भाष्य उपलब्ध है। छोटी रचनाओं में षोडस ग्रंथ बल्लभगीता के नाम से प्रसिध्द हैं इसके अन्तर्गत श्री यमुनाष्टकम्, बालबोधः, सिध्दान्त मुक्तावली, पुष्टि प्रवाह मर्यादाभेदः, सिध्दान्तरहस्यम्, नवरत्नस्तोत्रम्, अन्तःकरण



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रबोधः, विवेकधैर्याश्रयः, कृष्णाश्रयः, चतुःश्लोकी, भक्ति वर्द्धिनी, जलभेदः, पञ्चपद्यानि, सन्यास निर्णयः, निरोधलक्षणम् तथा सेवाफलम् का समावेश है। सेवाफल विवृतिः व सेवाफल विवरणम् भी इन की रचना हैं अन्य छोटी रचनाओं में पत्रा-वलम्बनम्, गायत्री भाष्यम्, श्रीकृष्ण प्रेमामृतम्, पञ्चश्लोकी, न्यासादेश और शिक्षा श्लोक हैं। स्तोत्रों में श्री मधुराष्टकम्, श्री परिवृढाष्टक, श्री गिरिराज धार्याष्टक व श्री गोपीजन वल्ल-भाष्टक हैं। श्रीमद भगवद्गीता की टीका महाप्रभुजीने नहीं लिखी गोस्वामी वल्लभ इन्हीं के वंशज की वह रचना है।

इनकी अधूरी रचनाएँ इन के वंशजों ने - श्रीविट्ठलेश महाप्रभु व श्री पुरुशोतमजी सूरतवालों ने पूर्ण करने का यथावत् परिश्रम किया -





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



मेरी भव बाधा हरो, नागर नागरी सोय।
जा तन की झाँई परत, स्याम हरित दुति होय॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## प्रार्थना

देखा करूँ तुम्हारी लीला,
गाया करूँ तुम्हारा नाम ॥
सुना करूँ नित मुरली की धुन,
बचन तुम्हारे परम ललाम ॥
नेत्र-मधुप नित करें तुम्हारे,
बदन-कमल-मधु-रसका पान ॥
पूर्ण समर्पण हो जाये इन्द्रिय-
तन-मन-मति-जीवन प्राण ॥

•

नमोस्तवनन्ताय सहस्रमूर्तये ।
सहस्र पादाक्षे शिरोरूवाहिवे ॥
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते ।
सहस्रकोटि युगधारिणे नमः ॥

•

नमो नमो वाङ्मन स्यातिभूमये ।
नमो नमो वाङ्मन सैकभूमये ॥
नमो नमो अनन्त महाविभूतये ।
नमो नमो अनन्त दयेक सिन्धवे ॥

•

## नैवेद्य समर्पण

असत्यमशुचिं नीचमपराधैक भाजनं ।
अल्पशक्तिमचैतन्यंमनर्हं भृत्यकर्मणि ॥१॥
दोषागारं दुरात्मानं मामेवं परिचिंतयन् ।
मत्समर्पितमित्येतन्नत्वमर्हस्युपेक्षितम् ॥२॥
नवनीत घृतं क्षीरं व्रजेयत्स्वंयमर्जितम् ।
यद्दतं यज्ञ पत्निभिर्यन्महेद्रण कल्पितम् ॥३॥
यदर्पितं कुचेलेन यद्याद्विदुर कल्पितम् ।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीमते भगवते वासुदेवाय ॥

## • गीता सौरभ •

भगवान बोलेः- "ॐ इस एक अक्षररूप ब्रह्म का, मेरे नाम का उच्चारण करते और मुक्तनामी का स्मरण करते हुए जो अपने प्राणों को मस्तक में चढाकर शरीर त्याग करता है वह परमगति को प्राप्त होता है यानी पुनजन्महीन आत्मस्वरूप को प्राप्त हो जाता है कवि, पुरातन, अनुशासन करनेवाले, सुक्ष्म से सूक्ष्मतर, सब के धाता, आचिन्त्यरूप और अंधकार में सूर्य के समान वर्णवाले परमेश्वर का जो मनुष्य मरने के समय भक्ति से युक्त योगबल द्वारा अचल किये हुए मन से दोनो भृकुटियों बीच में प्राणों को स्थित कर के स्मरण कर के मरता है वह मुक्त को प्राप्त होता है।"

भगवान कृष्ण का विश्वस्वरूप दर्शन करके अर्जुन ने कहा-

"हे इंद्रियोंके स्वामी परमेश्वर यह उचित है कि आपके यश कीर्तन से जगत् अत्यंत हर्षित और अनुराग को प्राप्त हो रहा है। राक्षस लोग भयभीत हुए सब दिशाओं की ओर वेग से भाग रहे है और समस्त सिद्धों के समुह आप को नमस्कार कर रहे हैं॥"

भगवान बोले- 'वह परमेश्वर बिना हाथ पैर के चलने व ग्रहण करनेवाला है, बिना आँखों के देखता व बिना कानों के सुनता है' इस प्रकार परब्रह्म को बिना हाथ पैर आदि का कार्य करने वाला श्रुति बतलाती है वह सर्व व्यापी है।

यह सनातन अश्वत्थ उपर मूल और नीचे शाखा वाला है सातों लोकों के उपर रहने वाला ब्रह्मा इस का आदि है पृथिवी लोक में बसने वाली सब प्राणी और स्थावर तक फैला होने के कारण नीचे शाखा वाला है। अनासक्ति के हेतुभूत सम्यक् ज्ञान के उदय होने के कारण प्रकट रूप में अच्छेद्य



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, इस लिये इसे अव्यय कहते हैं। इस अश्वत्थ वृक्ष के वेद पत्ते हैं जो इसे जानता है वह वेद वेत्ता है।

मैं सब के हृदय में प्रविष्ठ हूँ मुझ से ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन होता है। सब वेदों से मैं ही जानने योग्य हूँ और वेदों के फल का कर्ता व वेद का जानने वाला हूँ वेद मेरा विधान करने वाले है इस प्रकार स्वयं जानता हूँ। इस लिये हे अर्जुन तू केवल मुझ सच्चिदानंद घन वासुदेव परमात्मा में अनन्य प्रेम से नित्य निरन्तर अचल मनवाला हो। मुझ परमेश्वर को ही श्रद्धा-प्रेमसहित निष्काम भाव से नाम गुण और प्रभाव के श्रवण, कीर्तन, मनन और पाठन द्वारा निरन्तर भजनेवाला हो। शङ्ख, चक्र, गदा पद्म और किरिट कुण्डल आदि भुषणों से युक्त पीताम्बर वनमाला और कौस्तुभमणिधारी मुझे मन वाणी और शरिर के द्वारा सर्वस्व अर्पण करके अतिशय श्रद्धा भक्ति और प्रेम से विह्वलतापूर्वक पूजन करनेवाला हो। मुझ सर्वशक्तिमान् विभूति बल, ऐश्वर्य, माधूर्य, गम्भीरता, उदारता, वात्सल्य और सुहृद्यता आदि गुणोंसे समपन्न सब के आश्रयरूप श्री वासुदेव को विनयभावपूर्वक भक्ति सहित दण्डवत प्रणाम कर।

(सप्त-श्लोकी गीता का अनुवाद रामानुजभाष्य गीताप्रेस के अनुसार)

आदौ देवकी गर्भजननं गोपी गृहे वर्धनं।
पूतना जीव ताप हरणं, गोवर्धनः धारणम्।।
कंसच्छेदन कौरवादि हननं कुन्तीसुतः पालनम्।
एतद् श्रीमद् भागवत श्रीकृष्ण चरित्र लीलामृतम्।।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# • मधुराष्टकम् •

(श्रीमहाप्रभुजी वल्लभाचार्यजी )

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥

श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है। उनके अधर मधुर हैं, मुख मधुर है, नेत्र मधुर हैं, हास्य मधुर है, हृदय मधुर है और गति भी अति मधुर है ॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥२॥

उनके वचन मधुर हैं, चरित्र मधुर है, वस्त्र मधुर हैं, अङ्गभंगी मधुर है, चाल मधुर है और भ्रमण भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है ॥२॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥३॥

उनकी वेणु मधुर है, चरणरज मधुर है, करकमल मधुर हैं, चरण मधुर हैं, नृत्य मधुर है और सख्य भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है ॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥४॥

उनका गान मधुर है, पान मधुर है, भोजन मधुर है, शयन मधुर है, रूप मधुर है और तिलक भी अति मधुर है, श्रीमधुराधिपतिका सभीकुछ मधुर है ॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥५॥

उनका कार्य मधुर है, तैरना मधुर है, हरण मधुर है, स्मरण मधुर है, उद्गार मधुर है और शान्ति भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभीकुछ मधुर हैं।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥६॥

उनकी गुञ्जा मधुर है, माला मधुर है, यमुना मधुर है, उसकी तरंगें मधुर हैं; उसका जल मधुर है और कमल भी अतिमधुर है; मधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर हैं ॥६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥७॥

गोपियाँ मधुर हैं, उनकीलीला मधुर है, उनका संयोग मधुर है, भोग मधुर है, निरीक्षण मधुर है और शिष्टाचार भी मधुर है; मधुराधिपतिका सभीकुछ मधुर है ॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥८॥

गोप मधुर हैं, गौएँ मधुर हैं, लकुटी मधुर है, रचना मधुर है, दलन मधुर है और उसका फल भी अति मधुर है; श्री मधुराधिपातिका सभीकुछ मधुर हैं ॥८॥







CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# श्रीनन्दकुमाराष्टकम्

(महाप्रभुजी श्रीवल्लभाचार्यजी)

सुन्दरगोपालम् उरवनमालं नयनविशालं दुखहरम्।
वृन्दावनचन्द्रमानन्दकन्दं परमानन्दं धरणिधरम्॥
वल्लभघनश्यामं पूर्णकामम् अत्यभिरामं प्रीतिकरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्॥१॥

जिनके हृदयमें वनमाला है, नेत्र बड़े-बड़े हैं, जो शोक-हारी, वृन्दावनके चंद्रमा, परमानन्दमय और पृथ्वीको धारण करनेवाले हैं, जो सबके प्रिय, मेघके समान श्यामल, पूर्णकाम, अत्यंत सुंदर और प्रेम करनेवाले हैं, उन समस्त सुखोंके सार-भूत, परब्रह्मस्वरूप, नन्दनन्दन मनमोहन, गोपाल श्रीकृष्णको तत्त्व जानकर भजो ॥१॥

सुन्दरवारिजवदनं निर्जितमदनम् आनन्दसदनं मुकुटधरम्।
गुञ्जाकृतिहारं विपिनविहारं परमोदारं चीरहरम्॥
वल्लभपटपीतं कृतउपवीतं करनवनीतं विबुधवरम्।भज०॥२॥

जिनका सुन्दर कमलके समान मुख है, जो अपनी कान्तिसे कामदेवको भी जीत चुके हैं, जो आनंदके आगार, मुकुटधारी, गुञ्जाकी माला पहननेवाले, वृन्दावनविहारी, परम उदार और गोपियोंके चीर हरण करनेवाले हैं, जिनको पीताम्बर प्रिय है, जो सुन्दर यज्ञोपवीत धारण किये हुए और हाथमें माखन लिये हुए है, उन समस्त सुखोंके सारभूत, परब्रह्मस्वरूप, देवेश्वर नन्दनन्दन श्रीकृष्णको तत्त्व जानकर भजो ॥२॥

शोभितमुखधूलं यमुनाकूलं निपटअतूलं सुखदतरम्।
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं वादितवेणुं मधुरसुरम्।
वल्लभमतिविमलं शुभपदकमलं नखरुचिअमलं तिमिरहरम्॥भज०॥३

जो यमुनातटपर मुँहमें धूल लपेटे शोभा पा रहे हैं, जिनकी कहीं तुलना नहीं है, जो परम सुखद है, जो धूलिधूसरित मुख हो, धेनु चराते और मधुर स्वरसे वेणु बजाते हैं, जो सबके



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रिय तथा अत्यन्त विमल हैं, जिनके चरणकमल सुन्दर हैं, नखोंकी कान्ति निर्मल है, जो अज्ञानान्धकारको दूर करते हैं, उन समस्त सुखोंके सारभूत परब्रह्मस्वरूप, नंदनन्दन श्रीकृष्णको तत्त्व जानकर भजो ॥३॥

शिरमुकुटसुदेशं कुञ्चितकेशं नटवरवेषं कामवरम्।
मायाकृतमनुजं हलधरअनुजं प्रतिहतदनुजं भारहरम्॥
बल्लभव्रजपालं सुभगसुचालं हितमनुकालं भाववरम्॥भज०॥४॥

जिनके सुन्दर मस्तकपर मुकुट है, बाल घुँघराले हैं, नटवर वेष है, जो कामसे भी अधिक सुन्दर है, मायासे मनुष्य अवतार धारण करते है, बलरामजीके छोटे भाई हैं, दानवोंको मारकर पृथ्वीका भार हरण करते हैं; जो व्रजके रक्षक, प्रियतम, सुन्दर गतिशील, प्रतिक्षण हित चाहनेवाले और उत्तम भाववाले हैं, उन सब सुखोंके सारभूत परब्रह्मस्वरूप, नन्दनन्दन श्रीकृष्णको तत्त्व जानकर भजो ॥४॥

इन्दीवरभासं प्रकटसुरासं कुसुमविकासं वंशिधरम्।
हृतमन्मथमानं रूपनिधानं कृतकलगानं चित्तहरम्॥
वल्लभमृदुहासं कुञ्जनिवासं विविधविलासं केलिकरम्।भज०५

जिनकी नीलकमलके समान कान्ति है, जिन्होंने पवित्र रास-रसको प्रकट किया है, जो कुसुमोंके समान विकसित रहते हैं, वंशी धारण करते हैं; जिन्होंने कन्दर्पके दर्पको चूर कर दिया है, जो रूपकी राशि है, मधुर गायन के द्वारा मन मोह लेते है, जिनका मधुर हास प्रिय लगता है, जो निकुञ्जोंमें रहकर नाना प्रकारकी लीलाएँ किया करते है, उन सब सुखोंके सारभूत, परब्रह्मस्वरूप, नन्दनन्दन श्रीकृष्णको तत्त्व जानकर भजो ॥५॥

अतिपरप्रवीणं पालितदीनं भक्ताधीनं कर्मकरम्।
मोहनमतिधीरं फणिबलवीरं हतपरवीरं तरलतरम्॥
वल्लभव्रजरमणं वारिजवदनं हलधरशमनं शैलधरम्॥भज०६

जो परम प्रवीण हैं, दीनोंके पालक और भक्तोंके


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधीन कर्मकरनेवाले हैं, जो अत्यंत धीर, मनमोहन, शेषके अवतार बलभद्ररूप, शत्रुवीरोंके नाशक, अतिशय चपल, प्रेममय व्रजमें रमनेवाले, कमलवदन, गोवर्धनधारी और हलधरजीको शान्त करनेवाले हैं, उन सब सुखोंके सारभूत, परब्रह्मस्वरूप, नंदनंदन श्रीकृष्ण को तत्त्व जानकर भजो ॥६॥

जलधरद्युतिअङ्गं ललितत्रिभङ्गं बहुकृतरङ्गं रसिकवरम्।
गोकुलपरिवारं मदनाकारं कुञ्जविहारं गूढतरम्॥
वल्लभव्रजचन्द्रं सुभगसुछन्दं कृतआनन्दं भ्रान्तिहरम्॥७

जिनके अंगकी कान्ति मेघके सदृश श्याम है, उसमें ललित त्रिभंग शोभा पाता है, जो नाना रंगोंमें रहते हैं, परम रसिक हैं, गोकुल ही जिनका परिवार है, मदनके समान सुन्दर आकृति है, जो कुञ्जोंमें विहार करते हैं, सर्वत्र अत्यंत गूढभावसे छिपे हैं, जो प्यारे व्रजचंद्र बड़-भागी और दिव्य लीलामय हैं, सदा आनंद करनेवाले और भ्रान्तिको भगानेवाले हैं, उन सब सुखोंके सारभूत, पर-ब्रह्मस्वरूप नन्दनन्दन श्रीकृष्णको तत्त्व जानकर भजो ॥७॥

वन्दितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विमलधरम्।
कालियशिरगमनं कृतफणिनमनं घातितयमनं मृदुलतरम्॥
वल्लभदुःखहरणं निर्मलचरणम् अशरणशरणं मुक्तिकरम् ॥८॥

जिनके दोनों चरण (भक्तोंद्वारा) वन्दित हैं, जो सबको पवित्र करते हैं और जगत्का उद्धार करनेवाले है, निर्मल भक्तोंको हृदयमें धारण करनेवाले तथा कालियानागके मस्तकपर नृत्य करनेवाले हैं, जिनकी शेषनाग भी स्तुति करते हैं, जो कालयवनके घातक और अतिकोमल है, जो अपने प्रियजनोंके शोकहारी, निर्मल चरणोंवाले, अशरणोंकी शरण और मोक्ष देनेवाले हैं, उन सब सुखोंके सारभूत, परब्रह्म-स्वरूप नन्दनन्दन श्रीकृष्णका तत्वरूपसे भजन करो॥८॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## ॥ अथ गोपी गीत ॥



जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि घृतासवस्त्वां विचन्वते ॥
न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिल देहिनामन्तरात्म दृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान्सात्त्वतां कुले ॥
विरचिताभयं वृष्णिधुर्यते · शरणमीयुषां संसृतेर्भ यत् ।
कर सरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहिनः श्रीकर ग्रहम् ॥
प्रणतदेहिनां पापकर्षणं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणि फणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# वेणुगीतम्

## छन्द वसन्ततिलका

येही बडोफल सखी! दृग के लहे को,
ऐसे बृजेश-सुतके मुखकों लखै जो।
लीन्हे सखान विहरैं बन गौ चरात,
बंसी बजात करि प्रेम कटाक्ष पात ॥१॥

आम्र-प्रवाल शिखिपिच्छ प्रसून-गुच्छ,
धारैं गलें कमल-उत्पल-माल स्वच्छ।
सोहैं विचित्र-छबि गोप-समाज-मांही,
गावैं प्रबीन-नट रङ्गथली यथाही ॥२॥

बंशी कियो तपकहा? सबही पिवै जो,
श्रीकृष्णकोऽधर-सुधा हमगोपियोंको।
फूले सरोजन अतःसरिता सहर्ष,
ये वृक्ष आर्यजिमि अश्रु तजै प्रकर्ष ॥३॥

दीनी सु-कीर्ति तुलसीबन ने महीकों,
शोभा लही सु हरिके पदचिन्हकी जो।
नाचैं मयूर मुरली-सुर-लीन-मत्त,
सो देखि जीव सब अद्रि तरैं प्रमत्त ॥४॥

हैं धन्य ये मृग-वधू अपि चित्त भोरी,
देखैं विचित्र-छवि कृष्ण-सु-रूप कों री!।
वंशी निनाद सुनि के सह-कृष्ण सार,
पूजा करैं प्रणय-पूरित दृक् पसार ॥५॥

एरी! मनोज्ञ लखिके हरि को स्वरूप,
वंशी ध्वनी मधुरहू सुनिके अनूप।
देवाङ्गनाविकल-काम-छ्हैं विमाना,
छाँडे प्रसून-कबरी पट को न ध्याना ॥६॥

गौ कृष्णके मुख कढ्यो वह वेनु-गान-,
पीयूष-पान करतीं जु उठाय कान।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्यों वत्स हू पय झरे स्तन-ग्रास-छाँडे,
ठाडे रहैं सु प्रभुकों हिय राखि गाढे ॥७॥

प्रायः विहङ्ग-गन ये मुनि आ वसे हैं,
बैठे अनेक तरुशाख प्रवाल पै हैं।
देखैं मुकुन्दमुख त्यों मुरली सुनैं है
कीन्हें सु मौन दृग-मीलित हो रहे हैं ॥८॥

वंसी ध्वनी सुनि नदी गति होत भग्ना,
आवर्त्त-सूचित-मनोभव में निमग्ना।
लैकै तरङ्ग-भुजसों कमलोपहारु,
गाढे गहैं सु हरि के पद-पद्म-चारु ॥९॥

स-भ्रात-गोप-घनश्याम वजात वेनु
देखै सु-श्याम-घन घाम-चरात-धेनु।
बाढै सप्रेम वपु कों करि आतपत्र,
वर्षैं प्रसून लखिकै हरि कों स्वमित्र ॥१०॥

गोपाङ्गना कुचन कुङ्कुम जो लगायो,
सो लागि कृष्ण-पद सों तृण पै गिरायो।
ता कों उरोज-तट पे शवरी लगावैं,
हैं धन्य वे स्मर-रुजातप कों मिटावैं ॥११॥

सांचौ अरी यह गिरी हरि-दास-श्रेष्ठ,
स्पर्शैं सहर्ष प्रभुके पद जो यथेष्ट।
गौ-गोप-युक्त इनकों हिय हर्षि सेवै,
पानीय-कन्द-फल-मूल स-प्रेम-देवै ॥१२॥

गौ-गोप-साथ-रसरी धरि कैं सु काँधै,
वंसी बजात जबही सुर सप्त साधै।
रोमाङ्ग वृक्ष रु रहैं चलजीव ठाडे,
हा! चित्र!! चेतन अचेतन भाव छाडे ॥१३॥



श्रीमद् भागवत दशम स्कंध, अध्याय २१
अनुवादक: श्री कन्हैयालालजी पोद्दार, मथुरा।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## • प्रणयगीत •

(हिन्दी अनुवाद श्री अखण्डानन्दजी सरस्वती)

गोप्य ऊचुः

मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं
संत्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम् ।
भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुक्षून् ॥३१॥

गोपियोंने कहा- प्यारे श्रीकृष्ण! तुम घट-घटव्यापी हो, हमारे हृदयकी बात जानते हो। तुम्हें इस प्रकार निष्ठुरताभरे वचन नहीं कहने चाहिये। हम सब कुछ छोडकर केवल तुम्हारे चरणोंमें ही प्रेम करती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि तुम स्वतन्त्र और हठीले हो। तुमपर हमारा कोई वश नहीं है। फिर भी तुम अपनी ओरसे, जैसे आदिपुरुष भगवान् नारायण कृपा करके अपने मुमुक्षु भक्तोंसे प्रेम करते हैं, वैसे ही हमें स्वीकार कर लो। हमारा त्याग मत करो॥३१॥

यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग
स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदा त्वयोक्तम् ।
अस्त्येवमेतदुपदेशपदे त्वयीशे
प्रेष्ठो भवांस्तनुभृतां किल बन्धुरात्मा ॥३२॥

प्यारे श्यामसुन्दर! तुम सब धर्मोंका रहस्य जानते हो। तुम्हारा यह कहना कि 'अपने पति, पुत्र और भाई-बन्धुओंकी सेवा करना ही स्त्रियोंका स्वधर्म है' - अक्षरशः ठीक है। परन्तु इस उपदेशके अनुसार हमें तुम्हारी ही सेवा करनी चाहिये; क्योंकि तुम्हीं सब उपदेशोंके पद (चरम लक्ष्य) हो; साक्षात् भगवान् हो। तुम्हीं समस्त शरीर-धारियोंके सुहृद् हो, आत्मा हो और परम प्रियतम हो॥३२॥

कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्मन्
नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ।
तन्न प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्या
आशां भृतां त्वयि चिरादरविन्दनेत्र ॥३३॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मज्ञानमें निपुण महापुरुष तुमसे ही प्रेम करते हैं, क्योंकि तुम नित्य प्रिय एवं अपने ही आत्मा हो। अनित्य एवं दुःखद पति-पुत्रादिसे क्या प्रयोजन है? परमेश्वर! इसलिए हमपर प्रसन्न होओ। कृपा करो। कमलनयन! चिरकालसे तुम्हारे प्रति पाली-पोसी हमारी आशा-अभिलाषाकी लहलहाती लताका छेदन मत करो॥३३॥

चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु
यन्निर्विशत्युत करावपि गृहकृत्ये।
पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलाद्
यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा॥३४॥

मनमोहन! अबतक हमारा चित्त घरके कामधन्धोंमें लगता था। इसीसे हमारे हाथ भी उनमें रमे हुए थे। परन्तु तुमने हमारे देखते-देखते हमारा वह चित्त लूट लिया। इसमें तुम्हें कोई कठिनाई भी नहीं उठानी पड़ी, तुम तो सुखस्वरूप हो न! परन्तु अब तो हमारी गति-मति निराली ही हो गयी है। हमारे ये पैर तुम्हारे चरणकमलोंको छोड़कर एक पग भी हटनेके लिये तैयार नहीं हैं, नहीं हट रहे हैं। फिर हम व्रजमें कैसे जायँ? और यदि वहाँ जायँ तो करें क्या?॥३४॥

सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृतपूरकेण
हासावलोककलगीतजहृच्छयाग्निम्।
नो चेद् वयं विरहजाग्न्युपयुक्तदेहा
ध्यानेन याम पदयोः पदवीं सखे ते॥३५॥

प्राणवल्लभ! हमारे प्यारे सखा! तुम्हारी मन्द-मन्द मधुर मुसकान, प्रेमभरी चितवन और मनोहर संगीतने हमारे हृदयमें तुम्हारे प्रेम और मिलनकी आग धधका दी है। उसे तुम अपने अधरोंकी रसधारासे बुझा दो। नहीं तो प्रियतम! हम सच कहती हैं, तुम्हारी विरह-व्यथाकी आगसे हम अपने-अपने शरीर जला देंगी और ध्यान के द्वारा तुम्हारे चरण-कमलोंको प्राप्त करेंगी॥३५॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यर्ह्यम्बुजाक्ष तव पादतलं रमाया
दत्तक्षणं क्वचिदरण्यजनप्रियस्य।
अस्प्राक्ष्म तत्प्रभृति नान्यसमक्षमङ्ग
स्थातुं त्वयाभिरमिता बत पारयामः ॥३६॥

प्यारे कमलनयन ! तुम वनवासियोंके प्यारे हो और वे भी तुमसे बहुत प्रेम करते हैं। इससे प्रायः तुम उन्हींके पास रहते हो। यहाँतक कि तुम्हारे जिन चरणकमलोंकी सेवाका अवसर स्वयं लक्ष्मीजीको भी कभी-कभी ही मिलता है, उन्हीं चरणोंका स्पर्श हमें प्राप्त हुआ। जिस दिन यह सौभाग्य हमें मिला और तुमने हमें स्वीकार करके आनन्दित किया, उसी दिनसे हम और किसीके सामने एक क्षणके लिये भी ठहरनेमें असमर्थ हो गयी हैं- पति-पुत्रादिकी सेवा तो दूर रही ॥३६॥

श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमे तुलस्या
लब्ध्वापि वक्षसि पदं किल भृत्यजुष्टम्।
यस्याः स्ववीक्षणकृतेऽन्यसुरप्रयास-
स्तद्वद् वयं च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥३७॥

हमारे स्वामी ! जिन लक्ष्मीजीका कृपाकटाक्ष प्राप्त करनेके लिये बड़े-बड़े देवता तपस्या करते रहते हैं, वही लक्ष्मीजी तुम्हारे वक्षःस्थलमें बिना किसीकी प्रतिद्वन्द्विताके स्थान प्राप्त कर लेनेपर भी अपनी सौत तुलसीके साथ तुम्हारे चरणोंकी रज पानेकी अभिलाषा किया करती हैं। अबतकके सभी भक्तोंने उस चरणरजका सेवन किया है। उन्हींके समान हम भी तुम्हारी उसी चरणरजकी शरणमें आयी हैं ॥३७॥

तन्नः प्रसीद वृजिनार्दन तेऽङ्घ्रिमूलं
प्राप्ता विसृज्य वसतीस्त्वदुपासनाशाः।
त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकाम-
तप्तात्मनां पुरुषभूषण देहि दास्यम् ॥३८॥

भगवन् ! अबतक जिन्होंने तुम्हारे चरणोंकी शरण ली,

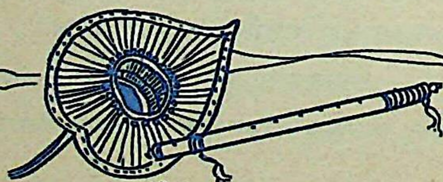


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनके सारे कष्ट तुमने मिटा दिये। अब तुम हमपर कृपा करो। हमें भी अपने प्रसादका भाजन बनाओ: हम तुम्हारी सेवा करने की आशा-अभिलाषासे घर, गाँव, कुटुम्ब-सबकुछ छोड़कर तुम्हारे युगल चरणोंकी शरणमें आयी हैं। प्रियतम! वहाँ तो तुम्हारी आराधनाके लिए अवकाश ही नहीं है। पुरुष-भूषण! पुरुषोत्तम तुम्हारी मधुर मुस्कान और चारु चितवन-ने हमारे हृदयमें प्रेमकी- मिलनकी आकांक्षाकी आग धधका दी। हमारा रोम-रोम उससे जल रहा है। तुम हमें अपनी दासी-के रुपमें स्वीकार कर लो। हमें अपनी सेवा का अवसर दो।।३८

वीक्ष्यालकावृतमुखं तव कुण्डलश्री-
गण्डस्थलाधर सुधं हसितावलोकम्।
दत्ताभयं च भुजदण्डयुगं विलोक्य
वक्षः श्रियैकरणमं च भवाम दास्यः ।।३९।।

प्रियतम! तुम्हारा सुंदर मुखकमल, जिसपर घुँघराली अलकें झलक रही हैं; तुम्हारे ये कमनीय कपोल, जिनपर सुंदर-सुन्दर कुण्डल अपना अनन्त सौंदर्य बिखेर रहे हैं; तुम्हारे ये मधुर अधर, जिनकी सुधा सुधाको भी लजानेवाली है, तुम्हारी यह नयनमनोहारी चितवन, जो मन्द-मन्द मुसकानसे उल्लसित हो रही है; तुम्हारी ये दोनों भुजाएँ, जो शरणा-गतोंको अभयदान देनेमें अत्यंत उदार हैं और तुम्हारा यह वक्षस्थल, जो लक्ष्मीजीका - सौंदर्यकी एकमात्र देवीका नित्य क्रीड़ास्थल है, देखकर हमसब तुम्हारी दासी हो गयी हैं।।३९।।





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# • गोपी गीत •

छन्द इन्दिरा।

(१)

व्रज सुधन्य भो जन्म तो जहां रम रमा अतः सर्वदा यहां।

प्रिय! सुदर्श दै हा! त्वदीय हैं जिय अधार हो! ढूंढती तुमैं।।

(२)

शरद्-कालके तालमें खिले-कमल-नैन सों मारते हमैं।

सुरत-नाथ! हैं सैंत-किंकरी वध न ये कहा नैनकी छुरी?।।

(३)

सविष-ताल सों व्याल-कालसों अनिल-मेघ सों विज्जु-वेगसों

वृषभ-व्योम सों विश्व-कोपसों रिषभ! तू करी है सहाय हो।।

(४)

नहिँ यशोमतीपुत्र तू सखे! अखिल विश्वको साक्षिरूप रे!।

स्तुति विरञ्चि सों विश्व-त्रानको उदय तू भयो वृष्णिवंश हो!।।

(५)

अभय तें किये शर्ण ही भये डरि भवाऽब्धिसों चर्ण जो गहे।

धृत रमा-करो कामदा खरो कर-सरोज सो शीश पै धरो।।

(६)

व्रज-जनार्ति कों की विनाश है गरब-नाश ही मन्द-हास है।

भज सखे! हमैं दासियाँ अहै मुखललाम को श्याम! दर्श है।।

(७)

शरण आतही पाप नाशनो पशुन साथ है श्री-निवाश जो।

फन-फनी धरो पाद-पद्म सो धरि उरोज पै काम कों हरो।।

(८)

मधुर-बैन सों मोद-दैन सों बुध-मनोज्ञ सों कञ्ज-नैन हो!।

सुधि रही नहीं दासियां इनैं अधर की सुधा प्यायदे हमैं।।

(९)

तव-कथा-अमी तप्त-जीवनी कविन की कही पाप हा सही।

श्रवण-मञ्जुला शान्त रूपही करत गान वे पुण्यवान ही।।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०)

मृदुल हास तो औ विहार वो प्रिय! सप्रेम की वो चितौन हो!।
रहसि में कहे हास वैन जो करत हैं हमैं हा! अचैन सो ।।

(११)

जब कहीं चलो गौ चरात हो मृदुल-कञ्जसे पादमञ्जु सों ।
श्रमित होंय वो भू-कठोर सों विकलता हमैं नाथ! होत सो॥

(१२)

अलक-श्यामसों छायहू रह्यो गउन धूरि सों पूरि जो रह्यो ।
मुख-सरोज सो देखि सांझही मन सकाम हो हा! नितान्त ही॥

(१३)

प्रणत कामदे पद्म-जा भजे विपदि-धेय जे रूप श्रेय के ।
भुवि-सुहाग ते पाद-पद्म वे धरु उरोज पै व्याधि-हा अरे!॥

(१४)

रति-वढात त्यों शोक-घात वो स्वरित-वेणु ने खूब जो पियो ।
इतर राग कों है भुलात जो अधर की सुधा देहु वीर! सो॥

(१५)

विपिन-जात हो नाँ दिखात है युग-समानही काल हो वहै।
वदन-कान्ति को देखतैं अहो! जड विधी, किये पल्क नैन हो!॥

(१६)

पति-सुतादि कों छाँडि कुल-गली तव समीप हा! आगई छली।
सरस-गीतसों मोहि जो गई तियन रैन में को तजै दई!॥

(१७)

बच इकन्त के मैन-पाश जो मुख सुहास औ दृक्-विलास कों।
उर विशाल हू श्री-निवाश जो लखि चहैं रती चित्त-मोह हो॥

(१८)

व्रज बसैं जिनैं क्लेशहा उनैं प्रकट तू भयो विश्व-क्षेम है।
स्वजन-पीर कों वीर! जो हनैं तनक, औषधी दै वही हमैं॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छन्द वसन्ततिलका

जो पादपद्म सुकुमार अहो! तिहारे;
धारे कठोरकुच जानि सभीत प्यारे।।
तासों चलो बन, कहा? नहिं है व्यथा रे!
हा! प्राणनाथ! भ्रम होत यही हमारे॥



श्रीमद् भागवत दशम स्कंध, अध्याय ३१
अनुवादकः श्री कन्हैयालालजी पोद्दार, मथुरा।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



वेणुनाद कामको जगानेवाला है। मुकुन्द भगवान की वेणु सुनकर देव स्त्रियां मुर्च्छित हो गई व नीवी का बंधन छूट गया व उन्हें भान नहीं रहा। यदि गोपियां भी मूर्छा को प्राप्त हों तो उस में कौन सा आश्चर्य है।


CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# • युगलगीत •

## छन्द स्वागता

(१)

वाम्बाहु धरि वामकपोल भ्रू-नचात सखि! सुन्दरलोल।
अङ्गुली-मृदुल सों सुर दाबै री! जबै मधुर-वेणु बजावै॥

(२)

देवनारि पतिसंग सुनैं, सो व्योम में चकित होंय लजैं वो।
काम-बानन-विधी-चित्त हू जो वस्त्र-ध्यान-तजि मोहित हू हो॥

(३)

ए सखी! सुनु विचित्र महा ये हार-हास उर मांहि रमा वे।
देत हर्ष हरि दीनन ही कों री! बजात जब हैं मुरली कों॥

(४)

दूरते हि मृग-गौ-गन-सारे वेणुनाद-हृत-चित्त-बिचारे।
दाँत-ग्रास-धरि कान-लगावैं नैन-मूंदि सम-चित्र लखावैं॥

(५)

बर्हपिच्छ दल-धातु-बनाये मल्ल-काछ-तन-धारि सुहाये।
ग्वाल-वाल-बलराम-समेते गौ-बुलात जब नामन लेते॥

(६)

भग्न होत गति है सरिता की प्रेम-कम्पित-भुजा तब ताकी।
पौन-नीत-रज ता-पद लागी चाहती हम-समान अभागी॥

(७)

निज सखा जिहिसुँ-कीरति-गावै विष्णु के सम विभूति सुहावै।
विपिन-चारि गिरि-गौन-चरावै वेणु सों जब उन्हैं जु बुलावै॥

(८)

वन-लता-द्रुमन डार तदा ही मानु विष्णु-प्रकटैं निजमाँही।
नमित होंय फल-फूल-न भारा प्रेम युक्त वरषैं मधु-धारा॥

(९)

दर्शनीयसिर-खौर-सुहाती दिव्य-गन्ध-तुलसी-मधुमाती।
भृङ्ग-माल-कल-गीत सुनावैं श्री-गुविन्द जब वेणु बजावैं॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१०)

सर-विहंग-कल-हंस-प्रमत्ता मञ्जु-गान-सुनि मोहित-चित्ता।
ध्यान-मग्न हरिके निकटैं आ मौन-धारि दृग मूंदत हैं हा! ॥

(११)

कर्ण-मूल बर फूलन दामाँ अद्रि-सानु सँग हैं बलरामा।
श्रीमुकुन्द जग-मोद-बढाते हर्ष-युक्त जब वेणु बजाते ॥

(१२)

जलद-मन्द-गरजे अति प्रीता पूजनीय हरिसों चितभीता।
सुहृद जानि सिर फूल-चढावे आतपत्र बनि ताप मिटावे ॥

(१३)

चतुर-गोप-शिशु-खेलन-मांही वेणु-वाद-नव-रीति-महाही।
जब अरी यशुदा! तव ताता ओष्ठबिम्ब धरि वेणु बजाता ॥

(१४)

तबहिं सो सुनि सबैं सुर-वृन्दा ब्रह्म-इन्द्र-शिव-पाय अनन्दा।
नमित-ग्रीव चित-ध्यान लगावैं राग-भेद नहिँ जानि लजावैं ॥

(१५)

पद-सरोज शुभ-चिन्ह विराजैं वज्र-नीरज-ध्वजाङ्कुशराजैं।
खुर-विथा-हरते व्रज-भूकी वेणु लै गति-चलै गजहूकी ॥

(१६)

करत हासऽरु कटाक्ष विलासा हा! तबैं हम बँधै स्मर-पासा।
तरु-समान गति होय हमारी भूलि जाहिँ कबरी अरु सारी ॥

(१७)

मणिधरैं कहुँ गऊन गिनै है मञ्जु-माल-तुलसी उरपै है।
प्रिय-सखान-गल-हाथ धरै है कृष्णाचद्र जब गान करै है ॥

(१८)

सुनत वेणु-धुनि चित्त-ठगी हैं आय कृष्ण-ढिगँ कृष्ण-मृगी हैं।
अचल हो गुण-निधी-चहुँपासा गोपिकान जिमि छाँडि-गृहाशा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(१९)

कुन्द-माल-तन-भूषन कीन्हे भानुजा-तट सखा-संग लीन्हे
नन्द-लाल तव वाल सुशीला! हर्ष देत जब खेलत लीला ॥

(२०)

पौन-मन्द-अनुकूल चलै है गन्ध-युक्त सनमान करै है।
वन्दि-रूप-बनिके उपदेवा वाद्य-गीत-न करैं हरि-सेवा

(२१)

है दयालु वृज पै गिरि-धारी पूज्य-पाद पथि-वृद्ध सदारी!
संग घेरि लावत सब धेनु कीर्ति-गावत-सखा कर-वेंनु ॥

(२२)

देखि के श्रमित हू दृग मोहै फूल-माल-न लगीरज सोहै।
आत हैं सुहृद आशिष दे हैं देवकी-उदार-भू-शशि ये है ॥

(२३)

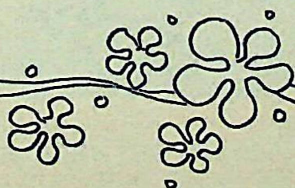
मद-भरी अँखियाँ कछु आली! हर्ष-देत हमको बनमाली।
वदन-पीत-बदरी-सम राजै हेम-कुण्डल कपोलन भ्राजै ॥

(२४)

यदुपती-द्विरद-राज-गती सों द्योस-अन्त उडु-राजि-पतीसो
मुख-प्रसन्न घरकों यह आवै दुर्निवार-दिन-ताप मिटावै ॥



श्रीमद्भागवत दशम स्कंध अध्याय ३५
अनुवादक: श्री कन्हैयालालजी पोद्दार, मथुरा।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## ॥ श्री वृन्दावनेश्वर ॥



वृन्दावनेश्वर मुकुंद मनोज्ञवेष, वंशी विभुषित कराम्बुज पदमनेत्र।
विश्वेश केशव ब्रजोत्सव भक्ति वश्य, देवेश पांडवपते मम देहि दास्यम॥

श्रीमद् वल्लभाचार्य



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री कृष्णस्य भगवान स्वयं ॥

वसुदेव सुतं देव कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानंदं कृष्णं वन्देजगद्गुरुम्॥१॥

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं चतुर्भुजं शङ्ख गदार्युदायुधम्।
श्रीवत्सलक्ष्मंगलशोभिकौस्तुभं पीताम्बरसान्द्रपयोदसौभगम्॥
महार्हवैदूर्यकिरिटकुण्डलत्विषा परिष्वक्त सहस्त्रकुन्तलम्॥
उद्दाम काञ्च्यङ्गदकङ्कणादिभिर्विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत॥२॥

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं बिभ्रद्वासः
कनक कपिशं वैजयन्तिं च मालाम्।
रन्ध्रान्वेणुरधरसुधयापूरयन्गोपवृन्दै-र्वृन्दारण्यं
स्वपदरमणं प्रविशद्गीतकीर्तिः॥३॥

वंशी विभूषितकरान्नव नीरदाभात्।
पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्॥
पूर्णेन्दु सुंदर मुखादरविन्द नेत्रात्।
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने॥४॥

अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसाम्।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णब्रह्मसनातनम्॥५॥

कृष्णायवासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥६॥

●

मूकं करोति वाचालं पंङ्गु लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानंद माधवम्॥७

हरे मुरारे मधुकैटभ हारे, गोपाल गोविन्दमुकुन्द शौरे।
यज्ञेश नारायण कृष्ण विष्णो, निराश्रय मांजगदीशरक्ष॥८॥

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनंदनाय च।
नंद-गोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥९॥

श्रीनाथ नारायण वासुदेव, श्रीकृष्ण भक्तप्रिय चक्रपाणे।
अनन्त वैकुण्ठमुकुंद कृष्ण गोविन्द दामोदर माधवेति॥१०॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ ६ से आगे

अन्यद्वाययद्यादिष्टं ते नित्यमुक्तैर्निवेदितं ॥४॥
यथा तथा स्वसंकल्पात् कल्पायत्वेदमेवहि।
अतिप्रभूतमत्यंतं भक्तिपूतं चतुर्विधम् ॥५॥
पथ्यं पाकं विशेषाढ्यं रुच्यं दोष विवर्जितम्।
दिव्यं दृष्टि प्रियं हृद्यं सरसं सौरमोत्तरम् ॥६॥

## आरती

आरती कृष्ण कन्हैयाकी। अधर धर मुरली बजैयाकी ॥ आरती
नाथ मथुरा में जन्म लियो,
नंद घर मंगलाचार कियो, यशोदा गोदखिलैया की ॥ आरती-
कृष्णा ने कंस असुर मार्यो,
श्यामने भूमिभार टार्यो, सहजमें नाग नथैयाकी ॥ आरती...
कृष्ण तुम अर्जुन के प्यारे,
श्याम हो भक्तन रखवारे, यमुना तट रास रचैयाकी ॥ आरती
कृष्ण तुम यशोदा के छैया,
नाथ बलदाऊ के भइया, जय बन-बन गाय चरैया की ॥ आरती

## मंगलाशासन

निलाचल निवासाय नित्याय परमात्मने।
सुभद्रा प्राणनाथाय जगन्नाथाय मंगलम् ॥१॥
आप्तकामाय पूर्णाय पुरशोत्तम वासिने।
परस्मै पुरुषायस्तु जगन्नाथाय मंगलम् ॥२॥
सुभद्राप्राणनाथाय सुभद्रावाहनशालिने।
बलभद्र सुनाथाय जगन्नाथाय मंगलम् ॥३॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# • भ्रमर गीत •

## (१) छन्द मालिनी।

मधुप! पद हमारे नाँ छुओ धूर्तप्यारे!,
सँवत-कुचन माला कुंकु मूछैं लगा रे!।
धरहु मधुपती उन् मानिनीके प्रसादू
हँसत यदु-सभा, जो दूत ऐसा बना तू॥

(२)

निज-अधर-सुधा वो मोहिनी प्याय थोरी,
जिमि कुसुम तजै तू, त्यों हमैं हाय! छोरी।
चरण-कमल-वाके क्यों भजै हैं रमाई,
सुनि रुचिर बडाई साँच ही वो ठगाई॥

(३)

षट्पद! हम आगे तू घनो का बखानै,
हम बनचर हैं, वा कृष्णकों खूब जानैं।
उन पुर-सखियों कों ये कथा गा सुनारे,
हृत-कुच-तप-वे हैं देहिंगी इष्ट सारे॥

(४)

त्रिभुवन तिय कोई दुर्लभा नाँहिं वाकों,
कपट-रुचिर-हाँसी भ्रूविलासी बडा वो।
कित हम, जब बाके पाद सेवे रमा है,
तदपि यश तभी जो दीन पै ह्वै दया है॥

(५)

तज पदहट, जानैं वो कृतघ्नी बडे हू॥
कपट विनय सीखी दूतता कृष्ण से तू।
पति सुत घर छाँडे जासु दासी कहाँई,
उन हमहिँ तजी हा! क्यौं मिलैं ताहि जाई॥

(६)

निठुर बनि वधो है व्याध ज्यों बालिही को,
स्व-रत-तिय, कुरूपा कीन्ह स्त्रीके वसी हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलि नृप बलि हू लै काक ज्यों पाश दी है,
तज सकँ न कथा, पै श्याम-प्रीती बुरी है॥

(७)

ललित- चरित- लीला श्रौन-पीयूष जाके,
जिन इकबर चारवे द्वंद्व छूटे सु ताके।
दुखित घरन त्यागे दीन होके फिरैं हैं,
विहँग इत वनेही भिक्षुचर्या करैं हैं॥

(८)

हम, स-कपट बातें साँच ही मानके वो,
मृग-तिय- अति- भोरीँ व्याधके गीतसे ज्यौँ।
नख परसि सहीँ हैं कामकी पीर बाँकी,
अनुभवित हमैं सो छाँड रे! बात ताकी॥

(९)

प्रिय- सख! फिरि आयो प्रीयने का पठायो?
चहतु कहु कहा? रे! का हमैं लैन आयो?
तजत न बनि है, क्यों लै चलै पास वाके,
उर-वसत-सदा-ही श्री-प्रिया सौम्य! ताके॥

(१०)

अबहु मधुपुरी में वो करै याद का? रे!
पितु-घर-न बतारे! गोप बन्धू-विचारे।
कबहु कछुकथा हम् दासियों की करै हो?
कर-कमल धरेगो शीश पै हा! कबैं वो॥

•

श्रीमद् भागवत दशम स्कंध, अध्याय ४७
अनुवादकः श्री कन्हैयालालजी पोद्दार, मथुरा।




CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## • महिषी गीत •

छन्द मालिनी।

(१)

कुररि ! विलपती तू क्यों न सोवै? बता री !
निशि-शयन-करै हैं या समैं श्री मुरारी।
स्मित-कलित-स-लीला-श्यामके नैन-कोर,
हम-सम सखि ! तेरो का लियो चित्त-चोर?।।

छन्द वसन्ततिलका।

(२)

मूंदै न नैन निशि-दीन-धुनी करै तू,
री। चक्रवाकि ! विरहाग्नि हिये जरै तू।
दासीभई हम-समान अहो ! स्वभाल,
क्यों री ! धर्‌यो चहत तू हरि-पाद-माल।।

छन्द इन्द्रवंशा।

(३)

रे। रे !! पयोधी !!! नित गर्जतो रहै,
जाग्यो करै नींद कबौं न तू लहै।
छीन्हे कहा? कृष्ण तवात्म-चिन्ह को,
पायो तुहूं मोह-दशा लखात जो।।

छन्द वसन्ततिलका।

(४)

तू चन्द्र ! क्षीन क्षय-रोग ग्रस्यो महान,
तेरे प्रकाश न भयो तम-नाशमान।
भूल्यो कहा? हम-समान मुकुन्द-बैन,
ठाडो लखात चुपसाधि अरे। अचैन।।

छन्द अनुष्टुप।

(५)

तेरो कहा? बुरो कीयो मलयानिल ! सो कहो।
कृष्ण - नैन-बिँधो-हीयो तू करै स्मर-ताप हो!।।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(६) छन्द मन्दाक्रान्ता।

साँचौ एरे! परम-प्रिय है मेघ! श्रीश्याम को तू,
ध्यावै गाढ़ैं हम-सम रमा-कान्त कों प्रेम सों तू।
अत्युत्कण्ठा हृदय करिके स्मर्णवाको अपारा,
बारंबारा हमसमसदा तू तजै वाष्प-धारा।

(७) छन्द वियोगिनी।

प्रिय-बोलत प्रीय-बैन से,
मृत-सञ्जीवन-दान दैन से।
कहु रे! पिक! मञ्जुभाषने,
हित तेरो हम का करें सखे!॥

(८) छन्द पुष्पिताग्रा।

न चलत न कहै कछू उदार,!
क्षितिधर! सोचत अर्थ तू अपार।
कहु हरि-पद-पद्म-चारु-प्यारे,
हम-सम तू स्तन पै चहै सु धारे?॥

(९) छन्द वसन्ततिलका।

हे सिन्धुपत्नि! तन-छीन-भई दिखावो,
सूखे ह्रदै विगत-कञ्ज-प्रभा जनावो।
प्रेमावलोकन कहा? प्रिय को न पावो,
हा! श्यामसुन्दर बिना हम ज्यों लखावो॥

(१०) छन्द शार्दूलविक्रीडित

आरे! हंस!! सुबैठ, पी पय, सुना श्रीकृष्ण-सम्बाद-ही,
जानैं हैं हम, दूत तू कहु? करैं वे बात वो याद ही।
वो है चञ्चल-मीत, प्रीत हमहू वासों करैंगी नहीं,
ला, रे! ताहि रमा-बिना इत, कहा? प्यारी अनोखी वही॥

•

श्रीमद् भागवत दशम स्कंध, अध्याय ९०
अनुवादक श्री कन्हैयालालजी पोद्दार, मथुरा।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## • शकटासुर उद्धार •

महाप्रलय के समय सब चर व अचर भगवान के पेट में समा जाते हैं व प्रभु बाल रूप होकर प्रयाग स्थित वट वृक्ष के पत्ते पर शयन करते है। चरणकमल के अंगुठे को करकमलोंसे पकड़ कर मुख कमल में चूसते है। चिरञ्जीवी मुनि मारकण्डेयजी को इस लीला का दर्शन देते हैं।

करार विन्देन पदारविन्दं, मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्,
वटस्य पत्रस्य पुटेशयानं, बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

कृष्णावतार में माताने शकट के निचे झूले में बालकृष्ण को सुलादिया- प्रभू सोचने लगे बड़े बड़े ऋषि मुनिजन चरण कमल रज-रस के पीछे पागल हो जाते हैं व पान करते हैं यहां तक की भोलेबाबा श्री शंकरजी भी हमेशा इस के लिये लालायित रहते हैं। प्रभु ने अंगुठा मुख में रखकर चुसना शुरू कर दिया। शंकर भगवान व ब्रह्माजी यह लीला देखकर घबरा गये व कहने लगे-प्रलय का समय हो गया?

बालकृष्ण ने अंगुठा मुख में से निकाल लिया व रोने लगे व स्तन पान के लिये जोर जोर से रोने लगे कारण उनके पेट में असंख्य बालक हैं वह भूखे थे। माता अतिथी व ब्रजवासियोंकी सेवा में मग्न थी रोना सुनाई ही नहीं दिया। प्रभु ने जो पाँव जोर से चलाया तो शकट उलट गया। गोप बालकोंने इसे देखा व ब्रजवासियों को बताया कि बालकृष्ण की पग की हरकतों से शकट उलट गया है। इस प्रकार बालकृष्णने शकटासुरका उध्दार किया।

करुणाकरि छाडि पग दीहों जानि सुरनि मन सेस।
सुरदास प्रभु असुर निकन्दन दुष्टनि के उर गेस ॥
उन ब्रजवासिन बात न जानी। समझे सूर सकट पग ठेलत॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



• राग- बिलावल •

देखो माई, दधिसुत में दधिजात।
एक अचंभो देख सखी री, रिपु मैं रिपुजु समात ।।
दधि पर कीर, कीर पर पंकज, पंकज के द्वै पात।
यै सोभा देखत पसुपालक, फूले अंग न समात ।।
बारंबार बिलोकि सोचि चित, नंद महर मुसकात।
यहै ध्यान मन आन स्याम कौ, सूरदास बलिजात ।।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

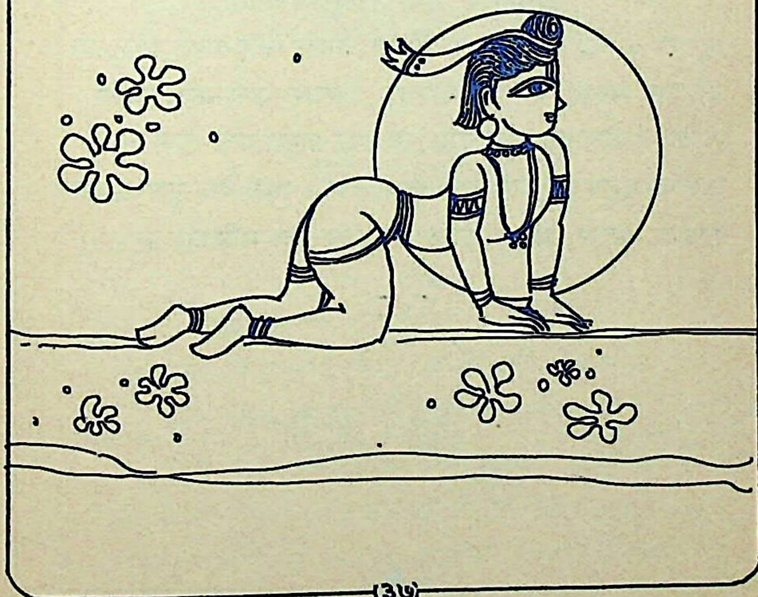
# भ्रमर गीत

## • प्रेम की तल्लीनता •

स्याम तन, स्याम मन, स्याम हैं हमारों धन,
आठों जाम उधो हमें स्याम ही सौं काम हैं।
स्याम हिए, स्याम जिए, स्याम बिनु नाहिं लिए
आँधे की सी लाकरी अधार स्याम नाम हैं॥
स्यामगति स्याममति- स्याम ही हैं प्राणपति,
स्याम सुखदायी सौं भलाई सोभाधाम हैं।
उधौ तुम भए बौरे, पाती लेके आए दौरे,
जोग कहाँ राखे यहाँ रोम रोम स्याम है॥

•

मधुकर स्याम हमारे चोर।
मनहर लिनो माधुरी मुरति,
निरख नयन की कोर॥





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# सूर के कूट

**• राग - बिलावल •**

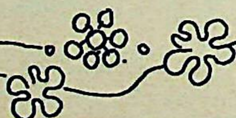
यहै तेरो वृन्दावन बाग।
सुनि राधिके कदंब विटप की, साखा एक अमृत फल लाग ॥१॥
स्याम पीत कछु अरुण अमित छबि, बरनि नजाय अंग विभाग।
अति सुपक्क मुरली के परसत, चुइ-चुइ परत अमीरस राग ॥२॥
बृज वनिता बर बारि कनकमय, रोकै रह सुरासुर नाग।
तव प्रताप छुइ सकत न सुंदरि, सुक, मुनि, मरकट, कोकिल काग।
मैं मालिनी जतन करि जुगयो, सींचत हाथ परे हैं दाग।
सूर श्याम उठि परसी भामिनी, पिय पियुष पायें बड़भाग ॥४॥

उपरोक्त पद में महा कविने कृष्णा की माधुरी का वर्णन किया है।

## श्री राधाजी के रूप का वर्णन

**• राग - सारंग •**

अद्भुत एक अनुपम बाग।
जुगल कमल पर गजवर क्रीडत, तापर सिंह करत अनुराग ॥
हरि पर सरवर, सर पर गिरवर, गिरपर फूले कंज पराग।
रुचिर कपोत बसे ता उपर, ता उपर अमृत फल लाग ॥
फल पर पुहुप, पुहुप पर पल्लव, ता पर सुक, पिक मृग-मद काग।
खंजन, धनुष, चंद्रमा उपर, ता उपर एक मनिधर नाग ॥





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्री बालकृष्ण विजयते ॥



## • बाल लीला •

जाको ब्रह्मा अन्त न पावे ।
तासों नन्द की नारि यशोदा, घर की टहल करावे ॥ १॥
शेष सनक नारद गनेश मुनि, जाके गुण नित गावे ।
निसि वासर खोजन पच हारे, मुनि मन ध्यान न आवे ॥२॥
धनि धनि गोकुल धनि ब्रज बनिता, निरखत श्याम बंधावे ।
सूरदास प्रभु प्रेमहि के बस, संतनि दरस दिखावे ॥३॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# • महाकवि सूरदासजी के पद •

॥ श्रीवल्लभ विजयते ॥  ॥ श्रीकृष्णाये नमः ॥

श्रीकृष्णं परमानन्दं दशलीलायुतं सदा।
सर्वभक्तसमुद्धारे विस्फुरन्तं परं नुमः ॥

॥ कृष्ण नाम महिमा ॥

राग- भैरव

कृष्णानाम रसना रटत धन्य कलि में,
ताके पद-पंकज के रेणू की बलि में ॥
सोई सुकृत सोई पुनीत, सोई कुलवन्ता,
जाको निशिवासर रहे कृष्ण नाम चिन्ता ॥१॥
जोग, यज्ञ, तीरथ, व्रत कृष्ण नाम माहीं,
बिना कृष्णा नाम, कलि उद्धार और नाहीं ॥२॥
सब सुख को सार, कृष्ण कबहु न बिसरिये,
कृष्ण नाम लेले भवसागर को वारिये ॥३॥
श्री गोवरधन घरन प्रभु, परम मङ्गलकारी,
उद्धरेजन, सूरदास ताकी बलिहारी ॥४॥

•

राग- बिलावल

शोभित कर नवनीत लिए।
घुटरुवन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए ॥१॥
चारु कपोल लोल लोचन छबि, गोरोचन को तिलक दिए।
लर लटकन मानो मत्त मधुप गज मादिक मधुहि पिए ॥२॥
कठुला कण्ठ व्रज्र केहरि नख, राजत है राखी रुचिए हिए।
धन्य सूर एको पल यह सुख, कहा भयो सत कल्प जिए ॥३॥

•



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# दामोदर लीला

## राग- धनाश्री

यशुमति रिस करि रज्जु आकरषे।
सुतहि क्रोध देखि माता को मन ही मन हरि हरषे ॥ १॥
उफनत छीर जननि करि दुचिती, यह बुधि भुजा छुड़ायो।
भाजन फोरि दह्यो सब डार्यो, माखन मुख लपटायो ॥२॥
ले आई जेवरी अब बांधों, मरम जानि न बंधाये ।
अंगुर द्वै घटि होत सबनि सों, पुनि पुनि और मंगाये ॥३॥
नारद श्राप भये यमलार्जुन, इन को अब जो उधारो ।
सूरदास प्रभु कहत भक्त हित, जनम जनम तनु धारो ॥४॥



## राग- बिलावल

कब के बांधे उखल श्याम।
कमल नयन बाहिर ही राखे तू बैठी सुख धाम ॥ १॥
हे निर्दय दया तोहि नांहीं लागि रही ग्रह काम।
देखि क्षुधाते मुख कुमलानों अति कोमल तन श्याम॥२॥
छांडो वेगि बड़ी बिरियाँ भई वीति गये युग याम ।
तेरे भयसों निकट न आवे बोलि सके नहीं राम ॥३॥
जन कारन भुज आप बंधाये वचन किये हँसी ताम।
ताही दिन ते प्रगट सूर प्रभु दामोदरसो नाम ॥ ४॥



## राग- नट

विधि मन ही मन सोच पर्‍यो।
गोकुल की रचना सब देखत अति जिय मांहि डर्‍यो ॥१॥
मैं बिरंचि बिरच्यो जग मेरो, यह कहि गर्व बढ़ायो।
ब्रज नर नारि ग्वाल बालक कहि, कौने ठाठ रचायो ॥२॥
वृन्दावन वट सघन तरुवर तर, मोहन सबै बुलायो।
सखा संग मिलि करत बन भोगि, विधि सन मर्म उपायो ॥३॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याते श्याम अतिहि अतुराने, तुरत वहां उठ धायो।
बालक बच्छ हरे चतुरानन, ब्रह्म लोक पहुँचायो ॥ ४॥
यह विचारि सब भए आपुहि, बयरंग प्रकृति करायो।
सूरदास प्रभु गर्व विनासन, नव कृत फेरि बनायो ॥५॥

●

### राग-बिलावल

संग सोभत बृषभाँनु किसोरी।
साँरग-नैन, बैन बर सारँग, बदन कहै छबि कोरी ॥
सारँग अधर, सुघर कर सारँग, सारँग जति, सारँग मति भोरी।
सारँग दसन, हसन पुनि सारँग, सारँग बसन पीत पर डोरी॥
सारँग चरन, पीठ पर सारँग, कनक खंभ मनों अहि लसोरी
सारँग बरन, दीठ पुनि सारँग, सारँग गति, सारँग कटि थोरी॥
सारँग पुलिन, रजनि रुचि सारँग, सारँग अंग सुभग भुज जोरी।
बिहरति सघन-कुंज सखि निरखति, 'सूर' स्याम-घन, दामिनि गोरी

<u>भावार्थ</u>- श्री कृष्ण के साथ राधा शोभायमान हैं। (वह कैसी है?) उनके खंजन से नेत्र, कोकिल सी सरस वाणी; मुख चंद्रमा जैसा है, तथा उसकी अछूती सुंदरता का कौन वर्णन कर सकता है। उनके अधर और हाथ कमल जैसे हैं तथा वह पद्मिनी जाति की सीधी सादी नायिका है। उसके हीरा जैसे दाँत तथा वैसा ही विद्युत-हास्य है। श्याम रंग की साड़ी है जो पीत वस्त्र की डोरी से बँधी हुई है। चरण कमल हैं। पीठपर चोटी ऐसी प्रतीत होती है मानो स्वर्ण के खंभ पर सर्प चढ़ा हुआ हो। वह स्वर्ण के रंग वाली है। कटाक्ष बाण जैसे, गज गामिनी और सिंह सी छोटी कटि वाली है। मधुर रात्रि में यमुना किनारे सुंदर भुजा मिलाये हुए कामातुर घनश्याम कृष्ण और दामिनी रूप राधा सघन कुंज में बिहार कर रहे है।

∴



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## राग- बिलावल

उरग लियो हरि को लपटाई।

गर्व वचन कहि मुख भाषत मोको नहीं जानत अहिराही॥
लियो लपेट चरण ते सिखलो अति यह मोसो करत ठिठाई।
चांपि पूंछि लुकावत अपनी युवतिन को नहि सकत दिखाई॥
प्रभु अन्तर्यामी सब जानत अवगारो यह सकुचि मिटाई।
सूरदास प्रभु तन विस्तारयो काली विकल भयो तब जाई॥

## राग- कान्हरो

जब ही श्याम तन अति बिस्तारयो।

चटपटात टूटत अंग जान्यो, शरण शरण अहिराज पुकार्यो॥

बहुत कृपा यह करी गुसांई।

इतनी कृपा करी नहिं काहू जिनतें लिये राखि राखवाई॥
कृपा करी प्रल्हाद भक्त को द्रुपद सुता पति राखी।
ग्राह मुखहि गजराज छुड़ाये, वेद पुरान न भाखी॥
जो कुछ कृपा करी काली सों सो काहू नहि कीनों।
कोटी ब्रह्माण्ड अंग प्रति रोमनि ते पग फनि प्रति दीनों॥
धरनी सिर धरि शेष गर्व करि यहि भरि अधिक संभारयो।
पूरन कृपा करी सूरज प्रभु फन फन प्रति पगु धारयो॥

●

## राग- सारङ्ग

चरावत वृन्दावन हरि धेनु।

ग्वाल सखा सब संग लगाए, खेलत है करि चेनु॥
कोऊ गावत कोउ मुरलि बजावत, कोउ विषान कोउ बेनु।
कोउ निर्तत कोउ उघरि तारि दे, जुरि व्रज बालक सेतु॥
त्रिविध पवन जहँ तहँ बहे निश दिन, सुभग कुंज घन ऐनु।
सूरश्याम निजु धाम बिसारत, आवत यह सुख लेनु॥

● ● ●



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राग-धनाश्री

वृन्दावन मोको अति भावत।

सुनहु सखा तुब सुबला सुदामा वृजतें बन गोचारन आवत।।
कामधेनु सुर तरु सुख जितने, रमा सहित वैकुण्ठ भुलावत।
यह वृन्दावन यह जमुना तट, ये सुरभी अति सुखद् चरावत
पुनि पुनि कहत श्याम श्री मुख सों, तुम मेरे मन अतिहि सुहावत
सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भए, यह लीला हरि प्रकट दिखावत।

॥ चीर हरण लीला ॥

बसन हरे सब कदंब चढाये।

सोले सहस्र गोपकन्या के, अंग आभूषण सहित चुराये ।।१।।
अति बिस्तार नीप, तरु, तामे लेले जहाँ लटकाये ।
मणि आभूषण डार, डारन प्रति, देखत छवि मनहि अटकाये।२
निलांबर, पाटंबर, सारी, श्वेत, पीत चुनरी अरुणाये।
सूर श्याम युवतिन व्रत पूरण को, कदंब डार फल पाये ।।३

•

जलते निकस तीर सब आवहु।

जैसे सविता सो कर जोरे, तैसेहूँ जोर दिखावहु ।।१।।
नव बाल हम, तरुण कान्ह तुम, कैसे अंग दिखावहु।
जलते सब बांह टेक के, देखहुं श्याम रिझावहु ।।२।।
ऐसे नहीं रीझों मैं तुम कूं. उँचे बांह उठावहू।
सूरदास प्रभु कहते हरि, चोली वस्तर तब पावहु।।३।।

•

चक्र के धरनहार गरुड़ के अवतार नंद के कुमार मेरो संकट निवारो।
यमला अर्जुन तार्यो गज ग्राहते उबार्यो, नागको नाथ हार मेरो प्रान प्यारो
गिरिवर कर धार्यो इंद्रहु को गर्व गार्यो, व्रजके रक्षनहार विरद् विचार्यो।
द्रुपद् सुताकी बेर तब क्यों न कीनी अबेर, अब क्यों
अबेर करो सूर सेवक तिहारो ।।

•



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## राधा मिलन-राग- टोडी

रसिक सिर मोर टेरि लगावत गावत राधा राधा नाम।
कुन्ज भवन बैठे मन मोहन अलि गोहन सोहन
बोलत मुख तेरोई गुन गान ॥
श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलीत तनु मनु
रोम रोम सुख रासी बाम।
सुरदास प्रभु गिरवरधर को चली मिलन गजराजगामिनी
झनक रुनक वन धाम।

## राधा विलास
### राग- बिलावल

जो सुख श्याम प्रिया संग किन्हो।
सो जुवतिन अपनी कर लीन्हो ॥
दुबिधा हृदय कछु नहीं राख्यो।
अति आनंद वचन मुख भाख्यो॥
यहैं कहती तब की अब नीके।
सकुचि हंसी नागरि शंग पी के॥
नयन कारे पिय हृदय निहारयो।
उनि पहले पीतांबर धारयो॥
सूरदास यह लीला गावै।
हरि पद शरन अछे फल पावै॥

•

### राग- बिलावल

तब अक्रूर कहत नृप आगे, धन्य धन्य नारद मुनि ज्ञानी।
बड़े शत्रु बृज में दोउ हमको सुनहु देवनीकी चित आनी।१।
महाराज तुम सरि को एसो जाते जगत यह चलत कहानी।
अब नहीं बचे क्रोध नृप किन्हों, जेहे घनकि तवा जो पानी ॥२॥
यह सुनि हर्ष भयो गवीनो, जबही कही अक्रूर सयानी।
कालि बुलाइ सूर दोउ मारौं, बार बार यह भाषत बानी ॥३॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राग-बिलावल

आतुर रथ अक्रूर चढे।

तब रसना हरि नाम भाषिकै लोचन नीर कढे ॥१॥

महरि पुत्र कहि सोर लगायो तरु जो धरनि लुढाई।

देखत नारि चित्रसी ठाढी चितये कुंअर कन्हाई ॥२॥

इतनेहि में कह दियो सबनिसो मिली है अवधि बिताई।

तनिक हँसे हरि मन जुवतिन को निठुर ठगोरी लाई ॥३॥

बोलत नहीं रही सब ठाढी श्याम ठगी ब्रज नारी।

सूर तुरत मधुवन पगु धारे धरनी के हितकारी ॥४॥

•

राग- सोरठ

मथुरा एसी आज बनी।

मानो पति को आगम जान्यो सजे सिंगार घनी ॥१॥

भूषण चित्र विचित्र देखियत शोभत सुंदर अंगनि।

मान कोटिकसी कटि किंकिनि उपवन बसन सुरंगनि ॥२॥





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# रसखान के सवैये

"इन मुसलमान हरिजन पै कोटिन हिन्दु वारिए।"

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र।

॥१॥

कहा 'रसखानि' सुख-संपति सुमार कहा,
कहा तनजोगी ह्वै लगाये अंग छार को॥
कहा साधे पंचानल, कहा सोये बीचजल,
कहा जीति लाये राज सिंधु आरपार को॥
जप बारबार तप संजय बयार-व्रत,
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को।
कीन्हौं नहीं पार, नहीं सेयो दरबार चित्त,
चाह्यौ न निहार्‍यौ जो पै नंद के कुमार को॥

॥२॥

ब्रम्ह मैं ढूढ्यौं पुरानन गानन, वेद-रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यौं सुन्यौं कबहूँ न कितूँ वह कैसे सुरुप औ कैसे सुभायन॥
टेरत-हेरत हारि पर्‍यो 'रसखानि'; बतायो न लोग-लुगायन।
देखो, दुर्‍यौ वह कुंज-कुटीर मैं, बैठो पलोटत राधिका-पायन॥

॥३॥

मानुष हौं, तौ वही रसखानि, बसौं ब्रज-गोकुल-गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तौ कहा बस मेरो, चरो नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं, तौ वही गिरि को, जो धर्‍यो कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं; तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥

॥४॥

जा दिन तें वह नन्द को छोहरा, या वन धेनु चराई गयो है।
मोहनि ताननि गोधन गावत, बेनू बजाइ रिझाइ गयो है॥
वा दिन सों कछु टोना सो कै, रसखान हिय में समाइ गयो है।
कोऊ न काहू की कानि करे सिगरो ब्रज वीर-बिकाइ गयो है॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥५॥

वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहू पुर कौ तजि डारौं ।
आठहुँ सिध्दि नवो निधि कौ सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥
'रसखानि' कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन-बाग-तड़ाग निहारौं।
कोटिक ये कल धौत के धाम, करील की कुंजन ऊपर वारौं ॥

॥६॥

काननि दै अँगुरी रहिबो, जबहीं मुरली-धुनि मंद बजै है ।
मोहिनी ताननि सों 'रसखानि' अटा चढ़ि गोधन गैहै तो गैहै॥
टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि, काल्हि, कोऊ सु कितो समुझैहै ।
माई री, वा मुख की मुसुकानि, संभारि न जैहै न जैहै न जैहै॥

॥७॥

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माला गरें पहिरौंगी
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी ॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी ।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरी अधरा न धरौंगी ॥

॥८॥

सेस गनेस महेस दिनेस, सुरेसहुँ जाहिं निरंतर गावै ।
जाहि अनादि अनन्त अखंड, अछेद अभेद सु वेद बतावै॥
नारद-से सुक व्यास रहैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावै ।
ताहि अहीर की छोहरिया, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

॥९॥

धूरि-भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति, पीरीं कछोटी॥
वा छवि को 'रसखानि' बिलोकत, वारत काम-कला निज कोटी।
काग के भाग बडे सजनी हरि-हाथ से लै गयो माखन रोटी॥

॥१०॥

आयो हुतो नियरें 'रसखानि' कहा कहौं तूँ न गई बहि ठैंया ।
या ब्रजमें सिगरी बनिता, सब वारति प्रानिनि, होति बलैया॥



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोऊ न काहू की कानि करै, कछु चेटक सो जू कियौ जदुरैया।
गाइगौ तान जमाइगौ नेह रिझाइगौ प्रान चराइगौ गैया॥

(११)

द्रौपदी औ गनिका गज गीध, अजामिल सों कियो सो न निहारो
गौतम-गेहिनी कैसे तरी, प्रहलाद को कैसे हर्‌यौ दुख भारो॥
काहे को सोच करे 'रसखानि' कहा करिहै रविनंद बिचारो।
ताखन जाखन राखियै माखन चाखन हारो सो राखन हारो॥

(१२)

लालन एक बिनय सुनिये, नित मेरी गलिन में आइये ना।
आइये तो चुप है चले जाइये, बंशी बजाइये गाइये ना॥
गाइये तो इतहूं उतहूं मेरे द्वार पर आइये सुनाइयेना।
सुनाइये तो अपनाइयेना, अपनाइये तो कहूँ जाइये ना॥

(१३)

कंचन के मंदिरन दीठि ठहरात नायँ,
सदा दीपमाल लाल रतन उजारे सौं।
और प्रभुताई सब कहाँ लौं बरवानौ, प्रति-
हारिन की भीर भूप टरत न द्वारे सौं॥
गंगाजू मैं न्हाय, मुकताहल लुटाय, बेद
बीस बार गाय ध्यान कीजै सरकारे सौं।
ऐसे ही भये तौ कहा कीन्हौं 'रसखान' जु पै
चित्त दै न कीन्ही प्रीत पीत पटवारे सौं॥

(१४)

दूध दुह्यौ सीरौ परयौ, तातौ न जमायौ वीर
जामन दयौ सो धरयौ धरयौई खटायगौ।
आन हाथ, आन पाय सबही के तबही ते,
जबही ते 'रसखानि' तानन सुनाय गौ॥
ज्यौं ही नर त्यौं ही नारी, तैसी ये तरूनि बारी,
कहिये कहा री, सब ब्रज बिललायगौ।

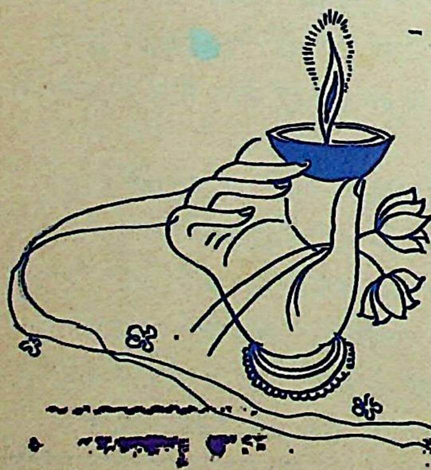

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानिये आली ! यह छोहरा जसोमति को,
बाँसुरी बजायगौं कि विष बगरायगौ ॥

(२५)

कौन ठगौरी भरी हरि आजु, बजाई है बाँसुरी रँग भीनी,
तान सुनी जिनहीं, तिनहीं तबही कुल-लाज बिदा करी दीनी।
धूमैं घरी-घरी नंद के द्वार, नवीनी कहा कहूँ बात प्रबीनी।
या ब्रजमंडल में 'रसखानि' सु कौन भटू जो लटू नहिं कीनी॥
बजी सुबजी रसखानि बजी, सुनि कै अब गोकुल-बाल न जीहै
न जीहै कदाचित कानन कौं, अब कान परी वह तान अणी है॥
अणी है, बचाऔ, उपाय नही, अबला पर आनि कै सैन सजी है।
सजी है हमारो कहा बस है, जब बैरिन बाँसुरी फेरि बजी है॥
आजु अली एक गोपलली भई बावरि, नैकु न अंग सँभारै।
मातु अघात न देवन पूजत, सासु सयानि-सयानि पुकारै॥
यौं रसखानि फिरी सगरे ब्रज, आन कुआन उपाय बिचारै।
कोउ न कान्हर के कर तें वह बैरन बासुरियाँ गहि डारै॥
ऐ सजनी वह नंदकुमार सु या बन धेनु चराइ रह्यौ है।
मोहनी तानन गोधन-गायन बेनु बजाइ रिझाई रह्यौ है॥
ताही समै कछु टोनौ करो, रसखानि हिये सु समाइ रह्यौ है।
कोउ न काहु की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गह्यो है॥

- रसखानि





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# • श्याम दिवानी शाहज़ादी •

प्रेम का है यह अफसाना गौर कर सुन लीजिये।
हिन्दू हो या मुसलमां इसकी न परवाः कीजिये॥
एक मुस्लिम शाह की लड़की सैर को देहली चली।
थे बहुत हाली हमाली, और संग में अरदली॥
थे बहुत से काज़ी मुल्ला, फोज भी थी सोहनी।
कर दिया मथुरा में डेरा, देख नगरी मोहनी॥
सुन के घन्टो की आवाज़ें, शाह की दुख़्तर ने कहा।
देखना सुनना ज़रा, ये शोर कैसा हो रहा॥
हँस के काज़ी बोल उठा, था कृष्ण नामी ग्वालिया।
जिसने बहका कर के हिन्दू, आप को पुजवा लिया॥
पर थी सिफ्त बंशी में उसके, सारे जग को मोह लिया।
हो गई थी कुरबां उस पे, सारे ब्रज की गोपियाँ॥
सुन के शहज़ादी ने कहा, मैं भी तो देखू जां फिसां।
हो गई क्यों कर थी उसपे, गोपियां ऐसी फिदां॥
सुन के काज़ी ने कहा, करना न इसका तज़करा।
देखना ही क्या उसे, वो था अहीर का छोकरा॥
देखले दुनियां की हर जां, आँख का यह फर्ज है।
देखूँ मनमोहन को गर, इसमें कहो क्या हर्ज है॥
शरह साबित कर रही है, ये न तुमको सूझता।
क्या गरज मुस्लिम को है, हिन्दू बुत को पूजता॥
हो गई ख़ामोश सुनकर, दर्द पैदा हो गया।
सो गई ख़ामोश हो कर, दिल तो शैदा हो गया।
सोते सोते ख्वाब में, उसको नज़ारा हो गया।
देखी सूरत श्याम की दिल माह पारा हो गया॥
चल दिये वृज के बिहारी, वो भी पीछे चल दई।
जाके हरी मन्दिर में वो, सूरत की मूरत हो गई॥

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय



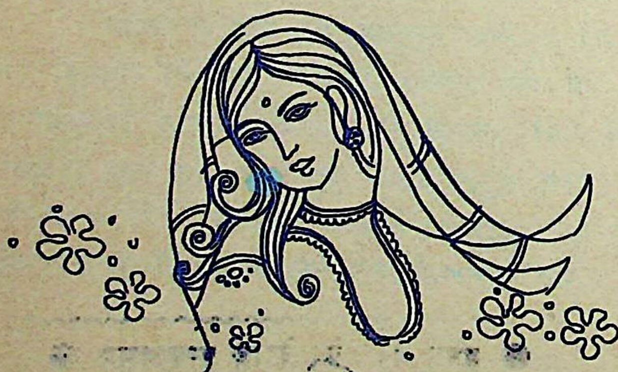
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख़ाक़ सब तन पर मली, और बाल लीने खोल कर।
फिर कहा क़ाज़ी व मुल्ला, पीर को ये बोल कर॥
क्यों खड़े हो सेन्ट साबून हाथ ले -
ख़ाक़ इन बालों में डाली जायेगी,
अब लगन हरी से लगाई जायेगी॥
कहा दो क़ाज़ी मुल्ला को, और पीर को -
मैं तो पूजूँ कृष्ण की तसबीर को।
लौ उन्हीं से अब लगाई जायेगी॥ ख़ाक़....
अब शरह मेरे, रही किस काम की -
श्याम मेरे हो चुके, मैं घनश्याम की
झोपड़ी बृज ही में डाली जायेगी॥ ख़ाक़...

•

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम,
इस्मकी बिकानी बदनामी हू सहूँगी में।
देवपूजा ठानी औ नमाज हू भुलानी,
तजे कलमा कुरान ताड़े गुननि गहूँगी मैं॥
साँवला सलोना सरदार सिर कल्लेदार,
तेरे नेहदाग में निदाध व्है दहूँगी मैं।
नन्द के कुमार कुरबान ताणी सूरत पै,
हौ तो मुग़लानी हिन्दुवानी व्है रहूँगी मैं॥

•





CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## • श्री राधा मोहन माधुरी •

### ॥ कीर्तन ॥

भज नन्द कुमारं सर्व सुख सारम्,
तत्व विचारम् ब्रह्म परम्।
भजो रे मनवा गोपी- बल्लभ,
राधेश्याम श्री राधेश्याम ॥१॥

सुन्दर गोपालम् उरवर मालम्,
नयन विशालम् दुःख हरम्।
वृन्दावन चंद्र मानक कंद,
परमानंद धरणि धरम् ॥२॥

यदुपति यादव यशोदा नंदन श्याम,
मन लुभावन राधेश्याम।
कुञ्जबिहारी श्री गोवरधन धारी,
आनंद दाता घनश्याम ॥३॥

पूतना को माता की गति दीनी,
यशोदानंदन घनश्याम।
माता को विश्वरूप दर्शन कराया,
माटी भक्षण कीनो श्याम ॥४॥

देखा निजका प्रति बिम्ब मणि खम्ब में
'तुम भी खालो' बोले श्याम
तोतली वाणी करत बाल लिला,
हरषी यशोदा सुनकर श्याम ॥५॥

मथनी फोडी लुटा दिया दही मक्खन
थक गई मां, फिर बंध श्याम।
उखल संग आये दामोदर
यमुलार्जुन का मुक्त किया शाप ॥६॥

ग्वाल बाल सहित गोपी गृह पधारे
पकड़ मा ढिग लाई श्याम।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रासोत्सव ः



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थमाय दियो वाके कंधे को हाथ,
राह में निसट गये श्याम ॥७॥
गौपालन व गौचारन गोपाल के,
वृन्दावन रज भई भुक्ति धाम ॥
दूध दही की सदा नदियां बहती,
वृन्दावन गोकुल वृजधाम ॥८॥
चुरा लिये ब्रह्मा ने बालक बछड़ा,
लेकर गये अपने धाम।
प्रगट किये वैसे ही बालक बछड़ा,
चूर किया गर्व घनश्याम ॥९॥
गेंद के संग कूदे कालिंदी दह में,
भंग किया कालिया विश्राम।
नाग नाथ्यो नृत्य करत सहस्र फन पर
हरषे वृज जन प्रगटे सुखधाम ॥१०॥
नटवर वेष वेणू बजाते मोहन
गोपीवल्लभ सुखधाम।
अधर सुधा रस बरसाते मन लुभाते
यशुमतिनंदन आनंद धाम ॥११॥
इन्द्र बदले गोवरधन पुजाया,
अद्भुत है लीला व काम।
इन्द्र ने वृजपर अथाहजल बरसाया,
नख पर गिरिवर श्याम ॥१२॥
श्रीकृष्ण गोविन्द मुकुन्द गोरे,
देवकीनंदन वासुदेव।
अनन्त वैकुण्ठ गोवरधनधारी,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥१३॥
आसोज पूनम रात्रि रास रचायो,
रसो वै सः कियो पूरन काम।



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोपियाँ भई निर्मल तन मन से,
योगेश्वर श्रीकृष्ण ललाम ॥१४॥

तृणावत बकासुर व्योमासुर केशी, आदिका किया काम तमाम।
कंसने भेजा अकरूर, धनुयज्ञ में, मथुरा लाने राम श्याम ॥१५॥
थमते नहीं थे आँसू वृज जन के, बिदा हुए जब राम श्याम।
रो-रो कर मुर्च्छित हुई गोपियाँ, शोक मग्न था नंद धाम ॥१६॥
विष्णुरूप में दर्शन कराया अक्रूर को, यमुना जल में व रथ में श्याम।
जय जय यादवकुल उबारनहार, विजयी भवः प्यारे घनश्याम ॥१७
जय नंद नंदन जय देवकी नंदन, मुकुट विहारी जय घनश्याम।
जय वासुदेव जय जय मुकुन्द कृष्ण, जय दामोदर जय श्याम ॥१८
नंद बाबा से पूछ चले निरखने मथुरा ग्वाल बाल सहित बलराम।
धोबी से छीने कपड़े लतिया कर, फिट किये दरजी सुखधाम ॥१९
पहना दी फूल माला मालाकार ने, राजसी ठाठ सज गये श्याम।
कुब्जा ने कंस का अंग राग लगाया, समझ निज का बड़ा भाग ॥२०
पकड़ ठुड्डी, पग पर रख चरण, दिया झटका, सुन्दर षोडशी भई धन्य श्याम।
नाचने लगी, की स्तुति व प्रार्थना, मेरे घर पधारो श्याम ॥२१।
जय-जयकार की भीड़ ने राम श्याम पहुँचे धनु मंडप अविराम।
यज्ञ हुवा भंग, टूटा धनु उठाते ही, रक्षक भागे मचा कुहराम ॥२२॥
उखाड़े दांत दोनों कुबलिया पीड़ के, रंग मंडप पहुँचे श्याम।
चाणुर मुष्टिक का गर्व चूर्ण किया, कंस का किया काम तमाम ॥२३
गले लगाया वसुदेव देवकी ने, प्रेमाश्रु सिञ्चित किया श्याम।
उग्रसेन को गद्दी पर बिठाया, राज सेवक बने राम श्याम ॥२४॥
जय सत् चित् आनंद रथांगपाणि, मुरली मनोहर घनश्याम।
आनंदकंद दामोदर देवकी नंदन, भजो रे मन वा निष्काम ॥२५॥
कृष्ण-कृष्ण रटते तुम बनो कृष्ण मय, जिव्हापर सदा कृष्ण नाम।
अंतर मन कृष्ण तन के कण-कण कृष्ण, ध्यान में रहे आठों याम ॥२६॥
श्यामजी की मुरली में राधेजी को नाम, राधेजी के मन में बसे श्याम।
सदा प्रेम से बोलो राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम ॥२७॥

रचयिता:- बेनीप्रसाद जाजोदिया.



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

## ॥ श्री रासोत्सव ॥

श्री राघवेन्द्र की रूपमाधुरी देखकर जलकपुर की स्त्रियां व पुरुष मोहित हो गये थे। कई ऋषि मुनिगण प्रभु की रूप माधुरी पर आसक्त थे- इन सब का जन्म श्री कृष्णावतार में बृज में हुआ यह सब गोपियोंके रूप में अवतरित हुई।

आसोज सुदी १५ के दिन जब चंद्रोदय हुआ भगवान कृष्ण ने बंशी बजाकर रासोत्सव के लिये निमंत्रण दिया- बंशी कूजन सारे विश्व में उन्ही को सुनाई दिया जो कृष्ण पर आसक्त थी। कुमारिकाएँ व विवाहिता वृज सुंदरियां वृन्दावन की ओर जिस हालत में थी चल पड़ी - देवांगनाओं में भी होड़ लग गई कि रासोत्सव निरखने के लिये जल्दी से जल्दी पहुँच जावें।

> भगवानपि ता रात्रिः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
> वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रिताः ॥

श्रीकृष्णने सब गोपियोंका स्वागत किया व अपने अपने घर वृन्दावन की शोभा निरखकर वापिस जाने के लिये कहा- प्रणय गीत में गोपियोंने स्पष्ट कह दिया वह अब घर बार कुटुंब सगे संबंधी छोड़कर आगई हैं। निरुपाय श्रीकृष्ण उन की इच्छानुसार वहीं बैठ गये व काम का उद्दीपन कर- भुजाओं को पसार कर, हाथ, अलक, जांघ, नीवी और स्तन का स्पर्शकर हास्य वचन, नखों के अग्र भाग चुभोकर हंस बोलकर- गोपियों को क्रीड़ा (रमण) कराने लगे। गोपियों को सौभाग्य मद हो गया भगवान अंतर्हित हो गये। अब तो खलबली मच गई व भगवद्रूप होकर उन की लीलाओं का अनुसरण करने लगी व यमुना पुलीन पर कृष्ण को ढूंढने लगी जब ढूंढने पर नहीं मिले तो निराश कर गोपी गीत द्वारा १६ गोपीयुथों ने अपनी व्यथा व कृष्णप्रेम व्यक्त किया व अन्त में दीन होकर रोने लगी



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान गोपियोंके मध्य प्रकट हुये। गोपियां तन मन वाणी से पूर्णतया कृष्णमय हो गई व भगवानने आनंद बढाने के लिये हर तरह से उनको बढ़ावा दिया। गोपियोंके मंडल से मंडित रासोत्सव प्रारंभ हुवा। भक्तवर सूरदासजीके शब्दों में सुनिये-

" रास मंडल बने स्याम स्यामा।
नारी दुहुँ पास दुहुँ पास गिरिधर, बने ससि बीस द्वादस उपमा ॥
मुकुट की छबि कहा उपमा, कहीं नयन आनत नहीं देह जाने।
सुभग नव मेघ ता बीच चपला चमकि, निरखि निर्तत मोर हर्ष माने॥
करति आनंद पिय संग ललना पुंज, बढत रसरंग छिन छिन औरै।
सूर प्रभु रास रस नागरी मध्य, दोउ परस्पर नारी पति मन हिं चौरे॥"

रास का वर्णन भक्त नंददास ने इन शब्दों में व्यक्त किया है-

" देखो देखोरी नागर नट नर्तत कालिंदी तट
गोपिन के मध्य राजे मुकुट लटक।
काछिनी किंकणी कटि पिताम्बर की चटक
कुण्डल किरण रवि रथ की अटक ॥१॥
तत थेई तालाथेई शब्द सक़ल घट
उरप तिरप गति पग की पटक।
रास में श्री राधे राधे मुरली में एक रट
नन्ददास गावें तहां निपट निकट ॥२॥

रातभर रास होता रहा। भोले बाबा की पोल खुल गई वहां से भागे तो गोपियोंने वस्त्र छीन लिये। अर्धनारिश्वर रूपमें वृन्दावनके दूसरे छोर पर पहुंचे।

" रास रमि श्रमित भई वृज बाल।
निसि सुख दे जमुना जल ले गये भोर भयो तेहि काल॥
मन कामना भई परिपूरन रही न एकौ साध।
षोड़स सहस नारिसंग मोहन कीन्हों सुख अगाध॥
जमुना जल विहरत नंद नंदन संग मिली सुकुमारि॥
सूर धन्य धरनी वृन्दावन रवितनया सुखकारि ॥" सूरदास



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रमानाथ भगवानने वृज सुन्दरियों के साथ वैसे ही खेल खेल में रमण किया जैसे बालक अपनी छाया के साथ करता है।

कामदेवने अपनी हार स्वीकार कर ली व प्रभु के चरणों में सिर नवाया कि आप योग योगेश्वर हैं व आप की लीला का पार कोई नहीं पा सकता।

## श्रीराधिकोपनिषद्-श्रीराधातत्व

भगवत्स्वरूपा श्रीराधाजीकी महिमा तथा उनके स्वरूप को बतानेवाला एक राधीकोपनिषद् है।

भगवान हरि कृष्ण ही परम देव हैं, वे (ऐश्वर्य, यश, श्री, धर्म, ज्ञान और वैराग्य) इन छहों ऐश्वर्यों से परिपूर्ण भगवान है। गोप-गोपियाँ उनका सेवन करती हैं। वृन्दा (तुलसीजी) उनकी आराधना करती है, वे वृन्दावनके स्वामी है, वे ही एकमात्र परमेश्वर हैं।

श्री कृष्ण की अनेक शक्तियाँ हैं। अहलादिनी शक्ति अंतरंग भूता श्री राधा (गान्धर्वा) संपूर्ण ईश्वरी, सनातनी विद्या व कृष्ण के प्राणों की अधिष्ठाती देवी हैं श्रुतियाँ निम्न नामों से इनकी महिमा-गान करती हैं।

१) राधा, २) रासेश्वरी, ३) रम्या, ४) कृष्णमन्त्राधिदेवता, ५) सविद्या, ६) सर्वबन्धा, ७) वृन्दावनविहारिणी, ८) वृन्दाराध्या, ९) रमा, १०) अशेषगोपीमण्डलपूर्जिता, ११) सत्त्या, १२) सत्यपरा, १३) सत्यभामा, १४) श्रीकृष्ण-वल्लभा, १५) वृषभानुसुता, १६) गोपी, १७) मूलप्रकृति, १८) ईश्वरी, १९) गन्धर्वा, २०) राधिका, २१) आरम्पा, २२) रुक्मिणी, २३) परमेश्वरी, २४) परात्परतरा, २५) पूर्णा, २६) पूर्णचंद्रनिभानना २७) भुक्तिमुक्तिप्रदा, २८) भव-व्याधिविनाशिनी।

श्रीराधाजी वृजसाहित्यकी देन नहीं है अपितु राधाने



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

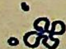
ब्रज साहित्य में आकर उसे परम चित्ताकर्षक और सरस बना दिया- रस के अनन्त सागर भगवान श्रीकृष्ण और रासेश्वरी श्रीराधा वास्तव में दोनों एक हैं। क्रीड़ा के लिये दो हो गये है। वैकुण्ठ से ५० करोड़ योजन उपर गोलोक निर्मित किया। भगवान की इच्छा रमण करने की हुई उसी समय आधे शरीरसे राधा प्रकट हुई राधा की देह से सारी गोपियां उत्त-पन्न हुई। जिस प्रकार श्री सम्प्रदाय में श्री लक्ष्मीजीकी कृपासे मोक्ष मिलता है उसी निम्बार्क सम्प्रदाय में राधाजीकी कृपा से जीव भव पार कर सकता है राधाजी मोक्ष ही नहीं देती किन्तु भोग भी।

सामरहस्योपनिषद में लिखा है आत्माराम श्रीकृष्ण की सच्ची उपासना श्रीराधाजी करती है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण तो सच में राधाकृष्ण का ही पुराण है द्रविण प्रबन्धों में राधाकी आराधना का अनुसरण मिलता है हर श्री वैष्णव मंदिरमें १ मास तक (इसी का उत्सव गोदा देवी के उत्सव नाम से मनाया जाता है) जिस की समाप्ति मकर संक्रांति पर होती है ~~यह उत्सव मनाया जाता है~~।

गीत गोविन्दकार जयदेव की पत्नि को तो रसिक लोग श्री राधाजी का अवतार मानते हैं।

राधा हिन्दु संस्कृति की अमर देन है। वह सदा अमर रहेगी।

जय जय 'राधा' रासेश्वरी, जय रासवासिनी ' जय जय जय।
'रसिकेश्वरी' जयति जय 'कृष्ण प्राणाधिका' नित्य जय जय ॥
'कृष्णस्वरूपिणि' 'कृष्णप्रिया' जय, परमानन्द स्वरूपिणि जय।
कृष्ण वाम- अंग- सम्भूता जय, 'कृष्णा' 'वृन्दा' जय जय जय ॥
वृन्दावनी जयति, जय 'वृन्दावन विनोदिनि' जय जय जय।
'चंद्रावति' 'शतचन्द्रनिभमुखी' 'चंद्रकान्ता' जय, जयजय॥







CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

# श्री राधाजी की जन्म आरती

(राग - बहार) तीन ताल

आरती श्रीवृषभानुलली की ।
सत-चित-आनंद-कंद-कली की ।।टेक।।
भय-भंजिनि भव-सागर-तारिनि,
पाप-ताप-कलि-कल्मष-हारिनि,
दिव्य धाम-गोलोक-विहारिनि,
जन पालिनि जगजननि-भलीकी ।।१।।
अखिल बिस्व आनंद-विधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नंदनँदन-पद-प्रेम-प्रदायिनि,
अमिय-राग-रस-रंग-रलीकी ।।२।।
नित्यानंदमयी आल्हादिनि,
आनंदघन-आनंद-प्रसाधिनि,
रसमयि, रसमय-मन-उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्णा-अलीकी ।।३।।
नित्य निकुंजेश्वरी रासेश्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेश्वरि
गोपगणाश्रयि गोपिजनेश्वरि,
बिमल-बिचित्र-भाव-अवीली की ।।४।।

## • श्री राधा बन्दना •

बंदौ राधा पद कमल अमल सकल सुकधाम ।
जिनके परसन हित राहत लालाइत स्याम ।।
जायति स्याम स्वामिनी परम निरमल रस की खान ।
जिन पद बलि-बलि जात नित माधव प्रेम-निधान ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग विद्यालय
ग्रन्थालय
आगत क्रमांक... 1020
दिनांक......

श्री राधाजी

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक...2156...
दिनांक......

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुद्रक - कलाकेन्द्र ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, जयस्तंभ, अमरावती.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥
परित्राणाय साधुनां विनाशायच दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे ॥
सर्व धर्मान्परित्यज मामेकं शरणं व्रज ।
अहंत्वासर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ॥
तत्र श्रीर्विजयो- र्भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri